शोध पत्रों को प्रकाशित करने के लिए विधि मान्य आई.एस.एस.एन 2321–9645

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

वर्ष 21, अंक 03, दिसम्बर 2021

हिन्दी मासिक, एक रचनात्मक क्रांति

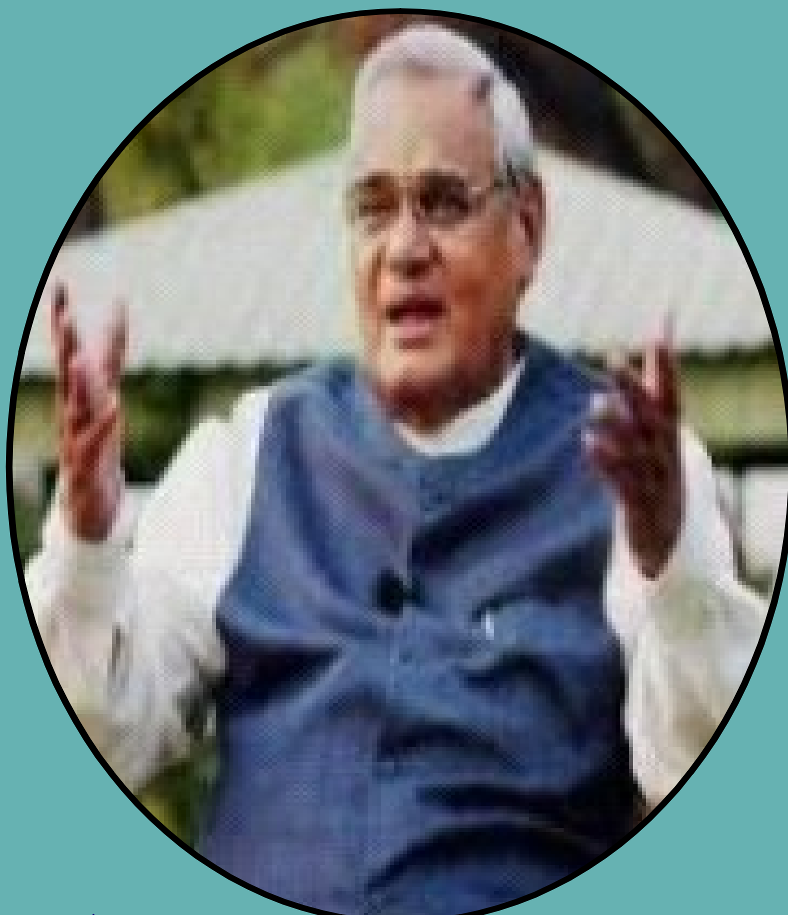

गीत नहीं गाता हूं
बेनकाब चेहरे हैं,
दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलस्म, आज सच से भय खाता हूं।
गीत नहीं गाता हूं।

मूल्य : 15 रुपये

चतुर्थ काव्य सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 11000/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तें: 1. रचना मौलिक होनी चाहिए. 2. प्रतियोगिता दो चरणों में होगी. प्रथम चरण के विजयी प्रतिभागियों को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। आयोजन स्थल पर ही एक विषय दिया जाएगा। दिए गए विषय पर 30 मिनट के अंदर रचना लिखकर देनी होगी और उसी रचना का काव्य पाठ करना होगा। 3. द्वितीय चरण के विजेता को 11000/रुपये नगद एवं काव्य सम्राट की उपाधि, द्वितीय एवं तृतीय स्थान प्राप्त करने वाले प्रतिभागियों को प्रशस्ति पत्र, स्मृति चिन्ह तथा शेष प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये पांच सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

चतुर्थ लघु कथा सम्राट प्रतियोगिता

पुरस्कार राशि 5001/रुपये मात्र

इस प्रतियोगिता में उम्र का कोई बंधन नहीं है. देश-विदेश का कोई भी रचनाकार इसमें प्रतिभाग कर सकता है. आपको अपनी एक रचना पठनीय हस्तलिपि अथवा टंकित कराकर भेजनी होगी। रचना के साथ अपना पूरा नाम, पता, एक फोटो, ह्वाट्सएप नंबर अगर ई-मेल हो ईमेल आईडी भेजना होगा।

नियम एवं शर्तें: 1. रचना मौलिक होनी चाहिए. 2. मौलिकता का प्रमाण पत्र देना अनिवार्य होगा। प्रतियोगिता के दो चरण है। दूसरे चरण के समस्त प्रतिभागियों को प्रशस्ती पत्र दिया जाएगा। विजयी प्रतिभागी को निर्धारित आयोजन स्थल पर उपस्थित होना होगा। विजेता को ५००१रुपये नगर, स्मृति चिन्ह तथा लघु कथा सम्राट का ताज प्रदान किया जाएगा। 5. प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये तीन सौ का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा।

खाता धारक का नामः **'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'** बैंक : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद** खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः **यूबीआईएन0553875**

आवेदन की अंतिम तिथि 15 जनवरी 2022

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी—93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नंः 9335155949,
sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

मासिक, वर्षः21, अंकः 03
दिसम्बर : 2021

इस अंक में......

आँचलिक कथा प्रवर्तक-क्रान्ति दूत फणीश्वरनाथ रेणु -------ं..............6

ममतामयी माँ 10

पं0 अटल बिहारी वाजपेयी : एक नजर में 12

स्थायी स्तम्भ

अपनी बातः टूटते परिवारः कारण व निवारण 04
उमंग 09
अध्यात्म : हनुमानजी बंदर नहीं थे 14
अध्यात्म : हाथ पसारे जाओगे 15
साहित्य, गणित और विज्ञान 16
साहित्य : भाषा का अस्तित्व लिपि पर अवलंबित है : प्रो0 गुरूमीत सिंह, परिवार के विघटन की समस्या भारतीय संस्कृति के लिए घातकः श्री हरेराम बाजपेयी 19, 24
मासिक परिचर्चाः महिलाओं की वर्तमान वेशभूषा कितनी जायजं 22
कविताए/गीत/ग़ज़लः शबनम शर्मा, देवेन्द्र कुमार मिश्रा, कीर्ति श्रीवास्तव, अनिल द्विवेदी 'तपन', रामचरण यादव, लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर', सरदार पंछी, पं0 मुकेश चतुर्वेदी, आचार्य भगवत दूबे, रोहित यादव, कुंवर वीरेन्द्र सिंह, ...20, 21, 23
कहानीः बगुलाराम की नीयति, तपती रेतल 18, 26
लघु कथाएंः शबनम शर्मा, ...32
समीक्षाः मैं ऋणी रहूंगा सदा तेरा, ...33

मुख्य संरक्षक
श्री बुद्धिसेन शर्मा
संरक्षक सदस्य
श्री डी.पी.उपाध्याय, बलिया, उ.प्र.

सम्पादक
गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सहयोगी संपादक
डॉ० सीमा वर्मा

विज्ञापन प्रबंधक
महेन्द्र कुमार अग्रवाल

ब्यूरो
ब्रज बिहारी ब्रजेश, खीरी
निगम प्रकाश कश्यप, मिर्जापुर, उ.प्र.

संपादकीय कार्यालयः
एल.आई.जी.—93, नीम सराय कालोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद —211011 का0: 09335155949
ई—मेलःvsnehsamaj@rediffmail.com

सभी पद अवैतनिक हैं
पत्रिका में प्रकाशित रचना का कोई भी पारिश्रमिक देय नहीं है।
प्रिंट लाईन—विश्व स्नेह समाज राष्ट्रीय हिन्दी मासिक पत्रिका, यूपीहिन्दी/

2001/8380, सर्वाधिकार सुरक्षित है. स्वामी की लिखित अनुमति के बिना सम्पूर्ण या आंशिक पुर्न प्रकाशन प्रतिबंधित है. स्वतत्वाधिकारी स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक और संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी के द्वारा भार्गव प्रेस बाई का बाग, इलाहाबाद से प्रकाशित किया.

नोटःपत्रिका में प्रकाशित रचनाओं, समाचारों इत्यादि से संपादक का सहमत होना आवश्यक नहीं हैं. इसके लिए लेखक, रचनाकार, सूचनाकार स्वयं ही उत्तरदायी हैं. जन—जन को सूचना मिलने के उद्देश्य से सभी के विचार, संदेश, आलोचना, शिकायत छापी जाती है. पत्रिका से सम्बन्धित किसी भी प्रकार के वाद—विवाद का निपटारा केवल इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश, की अदालतों में होगा.

अपनी बात

टूटते परिवार : कारण व निवारण

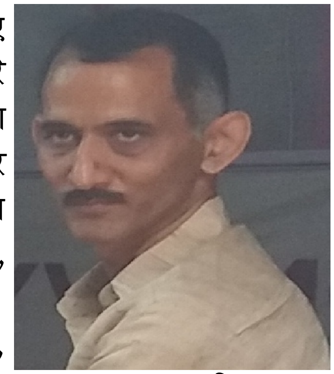

भारतीय संस्कृति में जहां परिवारों, पति-पत्नी के कितने बेमेल रिश्ते औरों के लिए मिसाल बनते रहे है, वहीं आज एक मेल के रिश्ते जो शादी के पहले एक दूसरे को देख, समझकर तय होते है, लेकिन शादी हुई और कुछ दिनों, कुछ महीनों अथवा कुछ ही वर्षो में टूटने लगे है। इसके दोषी कोई और नहीं बल्कि हम स्वयं है। अगर इसको मूल रुप में देखें तो मेरे विचार से निम्न चार कारण मुख्य हैः-संयुक्त परिवारों का विघटन, अहं एवं समझौतावादी दृष्टिकोण का अभाव, मायके का दखल, संस्कारों की कमी।

1-संयुक्त परिवारों का विघटन : जब संयुक्त परिवार होते थे तो सास, ननद, देवर, जेठ, जेठानी, देवरानी आदि घर में होते थे। पति और पत्नी को साथ रहने का बहुत कम समय मिलता था। जो समय मिला उसमें भी स्त्रियां ननद, सास, जेठानी, देवर देवरानी के क्रियाकलापों को अवगत कराने में ही निकल जाता था। सुबह उठे सबके लिए नाश्ता, खाना, झाड़ू, बर्तन आदि करते करते पूरा दिन निकल जाता था। इन सबके बावजूद भी अगर पति या पत्नी के मन में कहीं अहं या खटास आता भी तो था पहले तो कोई सून न ले, कोई क्या कहेगा, में कुछ वर्ष निकल जाते थे, फिर बच्चे, उनकी देखभाल। अगर इससे भी आगे बात बढ़ती थी घर के बड़े बुजुर्ग दोनों को डांट, समझाकर मामले को, खटास को निकालने का काम कर देते थे इसलिए चाहे जितनी भी खटास मन में आयी हो समाप्त हो जाती थी। कई हर तरह से बेमेल रिश्ते (एक गोरा-चिट्टा, दूसरा बिल्कुल सांवला/सांवली, एक बहुत पढ़ा लिखा और अगूंठा टेक, एक लम्बा एक नाटा, दोनों की अलग-अलग संस्कृति, सभ्यता, भोजन आदि) लेकिन ऐसे रिश्ते भी रिश्तों की मकड़जाल में पूरा जीवन शांति से, प्रेम पूर्वक निभ जाते थे। लेकिन आज एकल परिवारों की संख्या लगातार बढ़ती जा रही है। शादी होती है पति-पत्नि अलग, न सास ससुर, ननद, जेठ, जेठानी, देवर-देवरानी। कुछ दिनों तक प्रेम पूर्वक रिश्ते चले फिर खाली। मोबाइल, समय की कमी, एक ड्यूटी पर परेशान दूसरा घर में खाली होने से परेशान इत्यादि। ऐसे में इस समस्या से निजात के लिए जरुरत है संयुक्त परिवारों की ओर जाना।

२- अहं एवं समझौतावादी दृष्टिकोण का अभाव होना : अधिकांश दम्पत्ति पढ़े-लिखे होते है। दोनों के शिक्षित होने, अधिकांशतः दम्पत्ति नौकरी करते है, आर्थिक रुप से दोनों सक्षम होते है। ऐसे में अहं का होना स्वभाविक है। लेकिन अहं हमेशा घातक होता है खासकर दम्पत्ति के बीच तो यह दीमक की तरह है। आपस में अहं को त्यागकर ही रिश्ते को बचाया जा सकता है। छोटी-छोटी बातों को लेकर टकराव होते रहते है। यह स्वभाविक है। लेकिन समझौता तो मानव जीवन के शुरु होते ही प्रारंभ हो जाता है मरते दम तक साथ नहीं छोड़ता। जिसने आवश्यक मुद्दों पर समझौता करना सीख लिया उसे परिवार ही नहीं जीवन में भी आगे बढ़ने से कोई नहीं रोक सकता। कभी जरुरत पड़ी तो थोड़ा झूक लिए कभी हम, कभी तुम। झूके कोई भी क्या फर्क पड़ता है। पति पत्नी तो एक गाड़ी के दो पहिए है। एक पहिया कमजोर है तो क्या हुआ, दूसरा पहिया मजबूत तो है। कबीर दास जी ने कहा है

बड़ा भये तो क्या हुआ, जैसे पेड़ खजूर।
पंक्षी को छाया नहीं, भल लागे अति दूर।

वह घमंड, अकड़ किस काम का जिससे परिवार तबाह हो जाये, बच्चे बिना माँ या बाप के हो जाये। वह अहं किस काम का जिससे न तो आप चैन से जी सकते हो और न ही समाज आपको चैन से जीने देगा। पुरुष के लिए तो फिर भी कुछ है लेकिन एक परित्यकता महिला को भारतीय समाज चैन से जीने नहीं देगा। पग-पग पर कांटे मिलेगें। अपने को थोड़ा झुका ले क्या फर्क पड़ता है।

३- मैके का दखल : परिवारों को टूटने में एक अहम कारण मैके का बेटी के ससुराल में आवश्यकता से अधिक दखल है। शादी हुई छोटी-छोटी बात पर दखल देना, रोज बेटी से बात करना, उसे तरह-तरह के अनावश्यक सुझाव देना। लड़की सोचती है उसके पीछे उसकी माँ, उसका भाई है। लेकिन आपके परित्यक्त होते ही आपकी माँ, आपका भाई जो आपका हमदर्द था सबसे पहले आपसे पीछा छुड़ाएगा। माँ-बाप, भाई बहन आदि का सहयोग लीजिए, उन्हें सहयोग करना चाहिए लेकिन किसी विपत्ति के समय करें। सास-ससुर या पति के डांटने पर माँ या भाई का दखल उचित नहीं है। जब आपकी बहू के मायके से दखल होगा तब आप क्या करोगे। आप अपनी बेटी को समझाओ, डांटो अगर उसकी गल्ती न भी हो तो उसे डांटे कि तुम गलत हो, ताकि उसे आपका प्रश्रय महसूस न हो। अपने दामाद को भी गलती होने पर अकेले में समझाएं। यह तब होगा जब आप अपनी बेटी को विदा करने के बाद भी बेटी मानते हो तो जिसके घर आपकी बेटी गयी है वह भी किसी का बेटा है। उसका भी कुछ कर्तव्य है। बेटी का परिवार उसका नया घर है उस परिवार के हिसाब से उसे जीने दे। ग़ालिब का एक शेर है:-

बस कि दुश्वार है हर काम का आसां होना
आदमी को भी मय्यसर नहीं इंसां होना

४-संस्कारों की कमी : जब हम छोटे थे, बारात तीन दिन की होती थी। बारात में नाटक मंडली आती थी। दो रात और एक दिन अलग-अलग नाटक होते थे। दूसरे दिन सामान्यतः एक नाटक होता था (मेरे देखने के अनुसार)। उस नाटक का शीर्षक तो मुझे याद नहीं है लेकिन अंत में एक संदेश दिया जाता था "एक औरत ही बर्बाद घर को आबाद और आबाद घर को बर्बाद कर सकती है।" उस समय इस नाटक को दिखाये जाने का भाव बहुत समझ में नहीं आता था क्योंकि यह नाटक मैंने कक्षा ८ के पहले ही देखे थे। नाटक का पूरा भाव बहुत बाद में समझ आया और यह कटु सत्य भी है। शायद मेरे विचारों से मातृ शक्ति सहमत न हो लेकिन यह कटु सत्य था, आज भी है और भविष्य में भी रहेगा। चाहे स्त्री पुरुष दोनों पढ़े-लिखे हो, दोनों नौकरी करते हो फिर भी बच्चे माँ के अधिक करीब होते है। माँ के द्वारा दिया गया संस्कार, आचार-विचार एक पिता की तुलना में बच्चे को ज्यादे आकर्षित करता है। हम बच्चों को अंग्रेजियत के स्कूलों में उच्च शिक्षित तो करा देते हैं लेकिन अपनी संस्कृति और संस्कारों से लेश मात्र भी अवगत नहीं कराते है।

रखते हैं जो औरों के लिए प्यार का जज्बा
वो लोग कभी टूट कर बिखरा नहीं करते।

गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी

सबकुछ कुछ नहीं से शुरू हुआ था.

ऑंचलिक कथा-प्रवर्त्तक-क्रान्ति दूत फणीश्वरनाथ रेणु

1955 के आसपास लिखे गये 'मैला आँचल' से ही उनकी लोकप्रियता और शिष्टता शिखर पर पहुँच गयी। रेणु जी कुत्ता पालते थे। उन्होंने अपने कुत्ते 'सिप्पी' के दिवंगत हो जाने के बाद एक मार्मिक संस्मरण 'पत्र शैली' में लिखा है। पटना-जल प्रलय के पहले अध्याय का शीर्षक ही है 'कुत्ते की आवाज'।

-सीतारमण पाण्ड़ेय
रामबाग चौड़ी, पो०-रमना,
जिला-मुजफ्फरपुर, बिहार

हिन्दी के समृद्ध कथा लेखकीय परिदृश्य में कुछ ऐसे प्रबुद्ध प्रतिष्ठित विद्वान लेखक-कवि हुए हैं, जिन्होंने अपनी कार्ययित्री एवं सृजनशल प्रतिभा से भारतीय लोक साहित्य को समृद्ध एवं सुदष्ढ़ बनानें में न केवल महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है बल्कि सम्पूर्ण रूप से समर्पित भाव का परिचय भी दिया है। जिनमें प्रमुख रूप से 'रामवृक्ष बेनीपुरी', नागार्जुन, प्रेमचन्द्र आदि सुविज्ञ साहित्यकारों का नाम उल्लेखनीय है। उन्हीं सुविख्यात एवं सुप्रसिद्ध साहित्यकारों के बीच हिन्दी में आँचलिक कथा-साहित्य के प्रवर्त्तक ग्राम्य-लोक-साहित्यकार 'फणीश्वरनाथ रेणु' शाश्वत रूप से याद किये जाते रहेंगे। ज्ञातव्य हो कि वे ग्रामीण संस्कार के साहित्यकार तो थे ही, गाँव के आम जन-जीवन के साथ इनका विराट व्यक्तिव भी जुड़ा था। इनका साहित्य न केवल सहजता, सरलता और मानवीयता से ओत-प्रोत है, अपितु उसमें आम जन-जीवन का बिंब भी स्पष्ट झिलमिलाता है। वस्तुतः रेणु जी प्रेमचन्द्र की कथा-परम्परा के दूसरे कथाकार माने जाते हैं। उनका साहित्य वर्त्तमान परिवेश में पूर्णतः प्रासंगिक हैं।

फणीश्वरनाथ 'रेणु' का जन्म बिहार राज्य के अन्तर्गत सुदूर पूर्व पूर्णिया जिले के औराही-हिंगना गाँम में 4 मार्च 1921 ई० में हुआ था। इनकी प्रारंभिक शिक्षा अररिया और फारविसगंज में प्राप्त हुई और काशी हिन्दू विश्वविद्यालय के अन्तर्गत उन्होंने आई०ए० में दो वर्षों तक अध्ययन किया और स्वतंत्रता संग्राम के क्रम में चल रहे 1942 ई० की क्रान्ति में वे कुद पड़े। जिसके कारण उनकी आगे की विश्वविद्यालय पढ़ाई अवरूद्ध हो गयी।

अपने जीवन के प्रारम्भिक वर्षों में उन्होंने स्वाधीनता संघर्ष के साथ-साथ कई किसान आन्दोलनों में भाग लिया था। 1942 ई० के स्वतंत्रता संघर्ष में रेणु जी को जेल में जाना पड़ा और उसमें विभिन्न यातनाएँ भी झेलनी पड़ी। जिसके वजह से उनकी तबियत काफी खराब हो गयी तब उनकी गंभीर स्थिति को देखते हुए भागलपुर सेन्ट्रल जेल के शासक के द्वारा इन्हें पटना के सरकारी अस्पताल में भर्ती कराया गया।

1955 के आसपास 'मैला आँचल' (उपन्यास) लिखा और प्रकाशित कराने का प्रयास करने लगे। बाद में लतिका के अर्थिक सहयोग से वह छप सका। अपने प्रथम उपन्यास मैला आँचल से ही उनकी लोकप्रियता और शिष्टता शिखर पर पहुँच गयी। उनकी अन्य कथा-कृतियाँ हैं : परती परिकथा, जुलूस, दीर्घतमा, कितने चौराहे, पल्टू बाबू रोड़ (उपन्यास), ठुमरी, अहिंसा रात्रि की महक, अग्निखोर (कहानी संग्रह), ऋण जल, धन जल, नेपाली क्रान्तिकथा (रीर्पोताज) आदि। रेणु ने अपने रिपोर्ताज में नेपाल के जनतंत्रात्मक प्रणाली के संदर्भ में उल्लेख किया है कि-'1947 का मजदूरों का यह आंदोलन 1950 में हुए राणाशाही के विरूद्ध संग्राम की पृष्ठभूमि बना। यह नेपाल की जनता में जागरण का पहला शंखनाद था। अक्टूबर 1950 में नेपाल में क्रांति प्रारंभ हुई थी और 1951 की फरवरी, के अंत में नेपाल में पहली बार वहां लोकतंत्र की स्थापना हुई। रेणु ने 'नेपाली क्रांतिकथा' में इस लोमहर्षक युद्ध का जीवंत चित्र उपस्थित किया है।

1949 ई० पटना में आयी महानंदा नदी की बाढ़ का चित्रण करते हुए वे मालिक और कुत्ते के अटूट प्रेम का दर्शाने वाला एक प्रसंग रखते हैं। रेणु का लगाव कुत्तों से कितना अधिक था, यह सभी लोग लगभग जानते है।

वे कुत्ता पालते भी थे। उन्होंने अपने कुत्ते 'सिप्पी' के दिवंगत हो जाने के बाद एक मार्मिक संस्मरण 'पत्र शैली' में लिखा है। पटना-जल प्रलय के पहले अध्याय का शीर्षक ही है 'कुत्ते की आवाज'।

रेणु ने अपने दाम्पत्य जीवन के कई प्रसंगों का वर्णन किया है। रीर्पोताज में रेणु स्वयं बताते हैं-मैं 1952 ई० तक सक्रिय राजनीति में था।...अपने क्षेत्र के कई किसान आन्दोलन, काश्त-संघर्ष तथा मिल मजदूरों की हड़ताल के नारे लगाने और भाषण देने के अलावा पार्टी-पत्रिकाओं में उन संघर्षो के अनुभव पर रीपोर्ताज वगैरह लिखा करता था। बाद में मैंने पार्टी छोड़ दी। सक्रिय राजनीति से अलग होकर भी राजनीति से संन्यास नहीं ले सका।...पूछिए तो राजनीति ने मुझे बहुत दिया। अपने जिले के गाँव गाँव में घूमा, लोगों से मिला, उनके सुख-दुख का परिचय हुआ, चंदे वसूले। अपनी सक्रियता के कारण साथियों को सोते छोड़ वही चल देता। कहीं विदेशिया कही जालिम सिंह सिपहिया और किसी गाँव में ननदी-भौजइया के नाच-गान। वे नाच देखने से ज्यादा नाच देखने वालों को देखकर अचरज से मुग्ध हो जाते। तब समझा कि हमारे लक्ष्छेदार भाषणों से ज्यादा प्रभाव उस सांस्कृतिक चेतना का होता है, जो उन्हें मुसीबत में भी गाते रहने के लिए मजबूर किये रहती है। जहाँ तक बोली और भाषा का प्रश्न है, उन्हीं गाँवों में घूमकर भाषा की शक्ति के समझने को मौका मिला। इनकी साहित्यिक प्रतिभा और सेवाओं के लिए इन्हें भारत सरकार के द्वारा 1970 ई० में पद्मश्री की सम्मानोपाधि से विभूषित किया गया। किन्तु, बिहार आन्दोलन के दौरान जब जय प्रकाश नारायण पर पुलिस के द्वारा लाठी चार्य किया गया तो रेणु जी उसके विरोध में आकर पद्मश्री का अलंकरण राष्ट्रपति को लौटा दिया। वे फारविस गंज से निर्दलीय बिहार विधान सभा के लिए 1973 ई० में चुनाव लड़े थे लेकिन सफलता नहीं मिल सकी। स्वतंत्रता आन्दोलन के दरम्यान जयप्रकाश जी के द्वारा आवाहित क्रान्ति में रेणुजी लगभग चौहत्तर दिन पूर्णिया जेल में बंद रहे और उन्हें काफी विरोध झेलना पड़ा। आपातकाल के दौरान वे कर्पूरी ठाकुर के साथ नेपाल में जाकर भूमिगत हो गये। 1974 ई० में पुनः कर्पूरी ठाकुर के साथ नेपाल से लौट कर पटना आ गये। वे भयभीत रहते थे। जिसके कारण 'लतिका' ने इन्हें इंग्लैण्ड की बनी रिवाल्वर खरीद कर दे रही थी। जिसे वे हमेशा कार्यकाल में कमर से बाँध कर रखते थे। इनके अक्षय यश की प्राप्ति का आधार है, इनका कथा-साहित्य। अपनी कहानियों में रेणु ने गँवई तेबर को ठीक से पहचाना है और उसे यथार्थ का फलक प्रदान किया है। जिसका साधन है-भाषा और वस्तु की आँचलिकता। रेणु हिन्दी साहित्य के प्रथम लेखक हैं, जिन्होंने गीत-संगीत पर नयी बहस छेड़ी थी। उनकी कहानियों में संगीत के संवेदनात्मक स्वर के साथ-२ कलात्मक चित्रात्मकता भी द्रष्टव्य है। उनकी कहानियों की सबसे बड़ी विशेषता है-गँवई स्वर्श और मिटी की गंध से कथा की आत्मा को अभिभूत होना। उदाहरणस्वरूप इनके द्वारा लिखी गयी संवेदनशील 'संवदिया' कहानी को लीजिए-जिसमें ग्रमीण यथार्थ अधोगति तथा शेष जीवन पतिकुल ओर पितृकुल की दुहरी प्रतिष्ठा ढ़ोते रहने की उसकी करूणा विवशता के साथ मायके पर उसकी आशापूर्ण विश्वास का बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। इस कहानी में उस विधवा के गाँव के एक निठल्ले, किन्तु, संवेदनशील संवदिया के उत्तरदायित्व और उसकी भावना के अन्तः संघर्ष का भी बड़ा ही प्रभावशाली अंकन हुआ है। संवदिया कहानी में एक संदेश वाहक का कर्त्तव्य बोध एवं उकी निजी भावना के संघर्ष में उसकी करूणा विवशता के साथ मायके पर उसकी आशापूर्ण विश्वास का बड़ा ही मर्मस्पर्शी चित्रण किया गया है। इस कहानी में उस विधवा के गाँव के एक निठल्ले, किन्तु, संवेदनशील संवदिया के उत्तरदायित्व और उसकी भावना के अन्तः संघर्ष का भी बड़ा ही प्रभावशाली अंकन हुआ है। इनकी

पहली कहानी 'बटबाबा' है, जो विश्वामित्र पत्रिका में प्रकाशित हुई थी। इनकी सुप्रसिद्ध कहानी 'मारे गये गुलफाम' पर आधारित 'तीसरी कसम' फिल्म का निर्माण शंकर शैलेन्द्र के सहयोग से किया गया। जिसमें अभिनेता के रूप में राजकपूर और अभिनेत्री वहीदा रहमान पाट्य अदा किये। कहानी और संवाद स्वयं रेणु जी के द्वारा लिखे गये और संगीत जाने-माने संगीतकार शंकर शैलेनद्र ने दिया। यह फिल्म इतनी लोकप्रिय बन गयी कि सिनेमाघरों में महीनों भीड़ चलती रही। इसके कुछ प्रभावकारी असरदार और संवेदनात्मक संगीत सुनिए-

भारत में आये सुराज चलो सखि देखन को/दुनिया बनाने वाले का तेरे मन में समाई, काहे को दुनिया बनाई। सजन रे झूठ मत बोलो खुदा के पास जाना है, न हाथी है, न घोड़ा है
वहाँ पैदल ही जाना है....

फिल्म की स्टोरी अच्छी किन्तु, फिल्म दुखान्त है। दो चार लाख की जगह करीब अठ्ठारह बीस लाख रूपये की लागत से यह फिल्म बनी। अन्त में आर्थिक अभाव के कारण राजकपूर फिल्म को दुखान्त से दूर करना चाहते थे और कथा में परिवर्तन करने के लिए कहा जा रहा था, परन्तु रेणु जी स्टोरी परिवर्त्तन के पक्ष में बिलकुल नहीं हुए और उसकी स्टोरी ज्योंकि त्यों रह गयी। 'तीसरी कसम' के चक्कर में रेणु जी ने आकाशवाणी की नौकरी भी छोड़ दी। फिल्म को बनने के बाद वे पाँच सौ रूपये के कर्ज में डूबे हुए थे। अपनी आर्थिक स्थिति को देखते हुए उन्होंने दिनमान में लिखना शुरू किया और चार-पाँच वर्षो तक बिहार से लगातार लिखते रहे।

रेणुजी ने स्वयं कहा है कि-"मैं गाँव छोड़कर पटना चला गया और पटना से इलाहाबाद। उस समय सारे हिन्दुस्तान के लोग एक दिखाई पड़ रहे थे। लेकिन स्वतंत्रता प्राप्ति के पश्चात् अब देश में जहाँ भी जाता हूँ लोग पूछते है-आप किस जाति के है?...कौन उपजाति है आपका। किस धर्म को मानने वाले हैं? आदि-आदि। यह सुनकर मुझे दुख होता है।" प्रारम्भ में समाजवादी विचार धारा के लेखक थे। उस समय समाजवादी दल का एक सप्ताहिक पत्र जनता नाम से निकला करता था। जिसके सम्पादक रामवृक्ष बेनीपुरी जी थे। रेणु जी इस सप्ताहिक पत्र में रीर्पोताज लिखा करते थे। किन्तु, रेणु जी को लेखनी को बंदिश या राजनीति जकड़न पसंद नहीं थी। उसके कारण उन्होंने पार्टीवादी राजनीति से सन्यास ले लिया। किन्तु राजनीतिक कार्यकर्त्ता के रूप में जो अनुभव उन्हें हुआ, उसी के कारण वे मैला आँचल एवं परती परिकथा जैसे कालजयी उपन्यास लिख सके। दूसरा कोई लेखक इतने विराट परिदृश्य का उपन्यास नहीं लिख सका।

पटना के कई लेखक, कलाकार उनके पास पहुँचते थे और उनकी सहायता करते थे उनमें रामबचन राय, सत्यनारायण, परेस, नरेन्द्र घायल आदि जो उनकी जरूरत की चीजों को उन तक पहुँचाते थे और उनकी खोज-खबर लगातार लेते थे। रेणु पटना में जब भी रहते शाम को काफी हाउस जरूर जाते। वहाँ साहित्यकारों, पत्रकारों राजनीतिज्ञों के बीच गपशप होता, वे वांग्ला के कथाकार सतीशनाथ भादुड़ी को अपना गुरू मानते थे। उनकी कही बातों को आदर के साथ स्वीकार करते थे। उनसे रेणुजी का बहुत आत्मीय सबंध था। रेणु को वरिष्ठ साहित्यकार एवं दिनमान के संपादक अज्ञेय का सान्निध्य प्राप्त हुआ था। 1966 ई० में मध्य बिहार में अकाल क्षेत्रों को देखने अज्ञेय दिल्ली से पटना पहुँचे और अपने साथ रेणुजी को भी भ्रमण में ले गये। वे जब भी पटना आते इनसे मिले बिना नहीं जाते। एक तरफ रेणु लोक जीवन के साथ धीरे -धीरे पैठ बनाने लगे तो दूसरी ओर वे जनता को संगठित करने, गुलामी के बंधनों को तोड़ने के लिए भी कारगार कोशिश करते रहे। रेणु ने नेपाली क्रान्ति कथा में नेपाल के अन्तर्गत हुए जनतंत्रात्मक युद्ध का विस्तार से वर्णन किया है। रेणु लेखक थे, किन्तु नेपाली क्रांति में उन्होंने हथियार भी उठाई थी। उन्होंने अपने 'टामीगन' का नाम दिया था 1975 ई० में जब सोन नदी के पानी से पटना शहर भर गया था, तब इमरजेंसी के दिन थे और रेणु पेष्टिक अल्सर से पीड़ित थे। इस तरह शारीरिक एवं मानसिक दोनों स्तर पर वे त्रासद अवस्था में जी रहे थे।

शेष पृष्ठ 31 पर

उमंग

यदि उमंग न हो तो कार्य बोझ सा लगता है। परिणाम वांछित स्वरूप में नहीं आ पाता। दैनिक जीवन में इस प्रक्रिया का अनुभव सभी को होता रहता है। उमंग का जीवन में बड़ा महत्व है जहाँ उमंग होती है वहॉ कार्य संपन्न करने में आनंद भी होता है।

-प्रो०सी०वी० श्रीवास्तव
जबलपुर, म०प्र०

किसी कार्य को संपन्न करने की उत्कष्ट इच्छा को उमंग कहा जाता है। जब कार्य करने की उमंग होती है तो मन में बैचेनी सी होती है। यदि कार्य करने का पूरा प्रबंध नहीं होता तो कार्य करने के लिए सब कुछ जुटाने की अंतः प्रेरणा होती है। आंच पाकर जैसे चूल्हे पर दूध उबल उठता है या वायु के प्रवाह से स्थिर जल तरंगित हो उठता है वैसे ही व्यक्ति के मन में कार्य करने की उठी हुई तरंग को उमंग कहा जाता है। उमंग उठने के कई कारण होते हैं। इनमें रूचि प्रमुख है। रूचि स्वतः कार्य के प्रति लगाव होता है। कभी यह रूचि अन्य की प्रेरणा से होती है। अन्य अर्थात व्यक्ति परिस्थितिया दृश्य या अनुकरण की इच्छा कुछ भी हो सकता है। उमंग या उत्साह उत्पन्न होने से कार्य करने में आनंद आने लगता है। काम करने में थकान का अनुभव ही नहीं होता और काम को शीघ्र कर उसके वांछित परिणाम पाने की मनोवृत्ति जाग जाती है। यदि उमंग न हो तो कार्य बोझ सा ल गता है और उसको सही विधि से संपन्न करने में कठिनाई सी लगती है। परिणाम वांछित स्वरूप में नहीं आ पाता। दैनिक जीवन में इस प्रक्रिया का या ऐसे भाव का अनुभव सभी को होता रहता है। उदाहरण स्वरूप कहीं घूमने जाने का ही लें। यदि मन में उमंग जाने की होती है तो तैयार करने में जो आतुरता, तत्परता होती है वह स्वष्ट लक्षित होती है। यदि उमंग नहीं है तो जाने के लिये तैयारी करना कठिन होता हैमन में अनेकों बहाने उठते है कि जाने का कार्यक्रम टाल दिया जायें। शरीर में शिथिलता होती है। मन में ढ़ीलापन अपने आप जा जाता है। विद्यार्थी को यदि गणित का कोई प्रश्न हल करने को दिया जाता है तो उसे लगता है कि तुरंत न करके बाद में किया जाये। किसी की मदद ली जाये या कोई और उसका हल कर सही उत्तर बता दे। खुद न करना पड़े। परंतु जिसको गणित रूचि का विषय है वह तो तुरंत हल करने को लग जायेगा। उसे आनंद आयेगा। खुशी भी होगी और वह शीघ्र हल करके चाहेगा कि उसके हल को देखकर कोई उसकी प्रशंसा करें। उमंग का जीवन में बड़ा महत्व है जहाँ उमंग होती है वहॉ कार्य संपन्न करने में आनंद भी होता है शीघ्रता भी होती है और सफलता भी सुनिश्चित हो जाती है। उमंग होने से तन और मन में क्रिया करने का चाव होता है। उमंग और उत्साह के कारण कठिन और बड़े काम भी सरल तथा छोटे लगने लगते है। परिवेश आल्हादकारी हो जाता है। उमंग केवल, खुद को ही नहीं सभी दर्शको को प्रोत्साहित करती है उन्हें प्रेरणा देती है और एक नया इतिहास रच देती है। यदि कोलंबस के मन में नया भूभाग पा लेने की उमंग न होती तो वह यात्रा में घबराकर लौट पड़ा होता और अमेरिका की खोज न हो पाती। वैज्ञानिक मन में उमंग और उत्सुकता होने से ही नई खोज या आविष्कार हो पाते है। अगर एल्वा एपीशन को प्रकाश के लिये बल्ब लगाने की उमंग न होती तो क्या बिजली का बल्ब बन सका होता। क्या राईट बधुंओं ने वायुयान का अविष्कार कर लिया होता? आवश्यकता को अविष्कार की जननी कहा जाता है परंतु क्या बिना उमंग के कोई संभव हो पाता है। सफलता और सिद्धि के पीछे कार्य संचालि त करने वाले मन की उमंग और उत्सुकता का बड़ा हाथ होता है। उमंग के मन को ईश्वर का दिया बड़ा उपहार है जोहर काम करने के लिए प्रेरक तत्व है। उमंग आने से ही दुनियॉ में मनुष्य बड़े-२ काम कर पाता है।

ममतामयी माँ

स्त्री एक बार माँ के रूप में जन्मी तो जीवन भर माँ ही बनी रहती है, कोई और उसका व्यक्तिव ले ही नहीं सकता क्योंकि संतान का जन्म और उसका पालन-पोषण माँ का विशेषाधिकार ही है। माँ होना सरल नहीं है, माँ तो अपराजेय ही है। माता को बच्चे का प्रथम गुरू कहां गया है "मातृमान् पित्रमान् आचार्यवान् पुरूषों वेद" अर्थात् प्रथम गुरू माता, दूसरा गुरू पिता और तीसरा गुरू आचार्य है।

-सुरजीत सिंह साहनी
गुमानपुरा, कोटा राजस्थान

"है माँ तेरी सूरत से अलग भगवान की सूरत क्या होगी" के अनुरूप ही ममतामयी माँ स्वय भूखी-प्यासी रह, अपना खून-तन जला, दुख-कष्ट झेल पसीना बहाती रहती है किन्तु अपनी संतान को अपने आंचल में इस प्रकार से ढ़क लेती है कि वहां तक तनिक भी मुसीबत अथवा आंच नहीं पहुच पाती। श्री गुरू ग्रन्थ साहिब में माँ को स्नेह, प्रेम, त्याग, ममता एवं अनेकानेक गुणों का धारणी कहां गया है-"उतमों महि उतम" विशाल हृद्रय वाली सर्वाधिक महत्वपूर्ण धरती माता ''पवण गुरू पाणी पिता माता धरत महत्" भाई गुरूदास जी द्वारा माँ को मोक्ष का द्वार खोलने वाली देवी कहां गया है-"लोकवेद गुण गिआन विचु अरधा शरीरी मोख दुआरी।" इसी प्रकार वेदों में पृथ्वी पर विचरित चार देवताओं में से प्रथम स्थान माता का है, उपनिषद में लिखा है-"मातृ देवों भव्, पितृ देवो भव, आश्चर्य देवो भव, अतिथि देवो भव।" माँ शब्द का वह करूणामयी प्रतिरूप है जो आत्मा से निकलता है और आत्मा ही उसे उच्चारित करती है।

स्त्री एक बार माँ के रूप में जन्मी तो जीवन भर माँ ही बनी रहती है, कोई और उसका व्यक्तिव ले ही नहीं सकता क्योंकि संतान का जन्म और उसका पालन-पोषण माँ का विशेषाधिकार ही है। माँ होना सरल नहीं है, उसकी स्थिरता को हालात तो क्या प्रकृति भी कई-कई रूपों में चुनौती देती रहती है परन्तु माँ तो अपराजेय ही है उसके होसले के आगे तो इंसान ही नहीं अपितु कुदरत भी नतमस्तक है। माता को बच्चे का प्रथम गुरू कहां गया है "मातृमान् पित्रमान् आचार्यवान् पुरूषों वेद" अर्थात् प्रथम गुरू माता, दूसरा गुरू पिता और तीसरा गुरू आचार्य है। महाभारत में वेदव्यास द्वारा माता को भूमि का प्रारूप कहां गया है। ''माता गुरूतरा भूमेः।" जीवन के हर क्षण, धन बल का उपयोग समर्पित है तुमको। श्री गुरू ग्रंथ साहिब में मानव के लिए 'माता' मति (शिक्षा) और पिता 'संतोष' "मति माता संतोखु पिता सरि सहज समायउ।" गुरूनानक देव जी के अनुसार परिवार में माँ का स्थान सर्वोच्चता लिए हुए उस कमल फूल के समान जिसकी सुगन्ध से घर परिवार आंगन महक उठता है। गुरू गोविन्द सिंह जी ने 'अमृत' में मिठास लाने के लिए ममतामयी गुरू माता से मीठे बतासे मिलवाकर मातृत्व जागृत किया और माता का अभिवादन कर कहां ''भलो भयो तूं चल कर आई, नीर माहि पाई।" अनुदान और वरदान रूप जो शक्ति आपसे पाई है।

माँ को समय-समय पर परखा जाता है और हर कसौटी पर वह सदैव खरी उतरती आई है।परिवार में मुसीबत चाहे कितनी ही कड़ी धूप बनकर क्यों न आए किन्तु माँ के आंचल को भेद कर संतान तक पहुचपाना बहुत मुश्किल है। माँ प्रकृति का वह अनमोंल हीरा है जिसकी कोख से मानवता जन्म लेती है और जिसके स्पर्श मात्र से ही बड़े से बड़े दुख्-दर्द स्वतः ही ठीक होने लग जाते है। माँ के दो हाथ-दी आँखे ही सबको दृष्टव्य रूप में तो उसके कई हाथ-कई आंखे कार्यरत होती है जो कि संतान के जीवन सजाने-सवारने के कार्य में निर्बाध सहायक हो, दूर

बैठी अपनी संतान को माँ देख-सुन सकती है। स्वयं अस्वस्थ होने पर भी माँ परिवार का भोजन खुशी-खुशी बना देती है और अपने दुल्हन प्यार से बड़ी से बड़ी चिन्ता से उबार लेती है। माँ स्वय अति सुन्दर और कोमल फूल की भांती कोमल हैं किन्तु वह इतनी अधिक ममतामयी एवं बलशाली है कि उसके नेत्रों में बच्चों के लिए तो भावपूर्ण करूणामयी जल है किन्तु शत्रुओं के लिए तो ज्वलंत ज्वाला ही है।

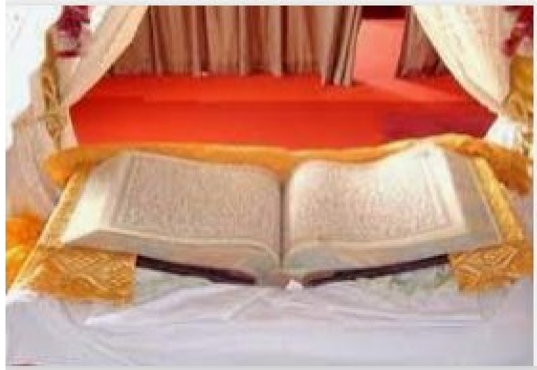

भारतीय संस्कृति में नारी का सदैव गौरवपूर्ण स्थान रहा है जहाँ माता के रूप में सभी धर्म शास्त्रों एवं धर्म ग्रंथों में नारी की उपमा कर अभिनन्दनीय कहा गया है। वेदों में तो कहीं-कहीं माँ को जीवन निर्मात्री "माता निर्माता भवति" कहकर सम्बोधित किया गया हैं। इंसान के जीवन में माँ का रिश्ता पवित्र, अति उत्तम एवं महत्वपूर्ण रहा है क्योंकि जन्म से पूर्व ही माँ और बच्चे के रिश्ते के तार आपस में जुझे हुए रहते है। माँ निरन्तर तो माह तक अपनी कोख में बच्चे को अपने रक्त से सिंचित कर पाल-पोस "एक शरीर दो जान" बन अपनी ममता लुटाती रहती है। संसारिक रिश्तों में एक मात्र माँ काही ऐसा रिश्ता है जिसकी उपमा एवं वर्णन विभिन्न धर्मो एवं धर्म ग्रन्थों में सर्वाधिक की गई है। ऋगवेद में माता-पिता को परमेश्वर कहा गया है ''त्वं हि नः पिता, त्वं माता, शत क्रतों बभूबिथ।" कर्म पुराण में माँ के समान कोई अन्य नहीं कहां गया है-"नास्ति मातृ समं देवम्।"

ममतामयी माँ वात्सलय और निश्चल सच्चे प्रेम की जीती जागती मूरत है जो कि नऐ जीवन की जन्मदात्री, पालनहान है। श्रीगुरू ग्रन्थ साहिब में माँ को सर्वोच्च मार्ग दर्शक, सर्वश्रेष्ठ एवं वन्दनीय कहा गया है क्योकि वही बच्चे का प्रथम शिक्षक होती है, 'माँ' एवं 'ईश्वर' को पिता के रूम में गुरूवाणी में प्रतिबिम्बित किया गया है। राजा महाराजा शूरवीरों, ऋषियो मुनियों की जन्मदात्री माँ पूजनीय है क्योंकि माँ इसान का ईमान है और वह बत्तीस गुणों "बतीह सुलखणी" सेवा, दया, सयंम, उदारता, निष्कपटता, धैर्य, ममता, उद्यम इत्यादि गुणों की धारणी है "मति माता, संतोखु पिता सरि सहज समायउ" गुरू नानक देव ने गुरूवाणी में अंकित किया है।

धरम चलावन संत उबारन,
दूसट सभन को मूल उपारन।

माँ जिन्दगी के सभी रिश्तों-संबंधों से परे सुहृदयी, ममतामयी, सच्ची सलाहकार एवं मार्गदर्शक शिक्षक है। कुरान और हदीस में निर्देशित किया गया है कि माँ (वालिदा) की आज्ञा पालन करते हुए सेवा करते रहें क्योंकि जन्नत माँ के कदमों तले ही है। जैन धर्म ग्रन्थों के अनुसार माँ का तात्पर्य ममता-प्रेम से है, संतान ने उत्पति के पूर्व जिस अद्वैत का अनुभव किया वह मातृत्व का अविस्मरणीय क्षण ही है, अद्वैत जब द्वैत बनता है तब दो हो जाते है एक माँ और दूसरा संतान। बाईबल में ईश्वर के स्नेह की तुलना माँ के प्यार से की गई है कि जिस प्रकार ईश्वर से शान्ती मिलती है उसी प्रकार माँ अपने बच्चों शान्ती प्रदान करती है इसलिए माँ का आज्ञाकारी रह उसका अनुसरण करते हुए किसी प्रकार का कष्ठ माता को नहीं पहुचाना चाहिए। जहां मेड़िकल साईन्स का प्रभाव सीमित हो जाता है वहां माँ का आंचल सुरक्षात्मक है जो हर कठिनाई से उबारने में सक्षम है और माँ के दर्शन मात्र से ही मानवता कृत-कृत हो उठती है। माँ को हर स्तर पर मुसीबतें तो घेरती रहती है। किन्तु उसका हृदय इतना विशाल है जो सदैव दुआ मांगने से पीछे नहीं हटता और हाथ आशिर्वाद देने से रूकता नहीं। माँ शब्द को न तो मस्तिष्क बुनता है और न ही जंबा बखान कर सकती है क्योंकि वह तो स्वयं ही ब्रह्म है, विज्ञान है, प्रकाश है, ज्ञान है। साधु कहों सुन लैहु सभै, जिन प्रेम कीओ तिन ही प्रभ पाईओ।

जन्म दिवस पर विशेष :

पं० अटल बिहारी वाजपेयी : एक नज़र में

पं० अटल बिहारी वाजपेयी का जन्म 25 दिसंबर 1924 को ग्वालियर राज्य, ब्रिटिश भारत (अब, मध्य प्रदेश, भारत) हुआ था। आपके पिता श्री कृष्ण बिहारी वाजपेयी (कवि और स्कूल मास्टर) थे तथा माता का नाम कृष्णा देवी था। आपके तीन भाई अवध बिहारी वाजपेयी, प्रेम बिहारी वाजपेयी, सुदा बिहारी वाजपेयी तथा तीन बहने उर्मिला मिश्रा, विमला मिश्रा, कमला देवी थी।

राजनीतिक आरम्भ अगस्त 1942 में भारत छोड़ो आंदोलन में भाग लेकर किया। 1957 में वह उत्तर प्रदेश के बलरामपुर से पहली बार लोकसभा के लिए चुने गए। 1975 में तत्कालीन प्रधानमंत्री इंदिरा गांधी द्वारा लगाए गए आंतरिक आपातकाल के दौरान उन्हें अन्य नेताओं के साथ गिरफ्तार किया गया और 1977 तक वह जेल में रहे। 1977 में वह मोरारजी देसाई के मंत्रिमंडल में विदेश मंत्री बने। 16 मई 1996 को, वह भारत के 10 वें प्रधानमंत्री बने। 19 मार्च 1998 से 22 मई 2004 तक, उन्होंने फिर से भारत के प्रधानमंत्री के रूप में कार्य किया। 1992 में पद्म विभूषण, 1994 में सर्वश्रेष्ठ सासंद पुरस्कार तथा 2015 में भारत रत्न से सम्मानित किया गया। आपकी अभिरुचि अभिरुचि कविता लिखना, भारतीय संगीत सुनना, पढ़ना, यात्रा करना था। आपके पसंदीदा नेता मोहनदास करमचंद गांधी (महात्मा गांधी), जवाहरलाल नेहरू, पसंदीदा लेखक शरतचंद्र और प्रेमचंद, पसंदीदा कवि हरिवंश राय बच्चन, रामनाथ अवस्थी, डा. शिवमंगल सिंह सुमन, सूर्यकान्त त्रिपाठी 'निराला', बाल कृष्ण शर्मा नवीन, जगन्नाथ प्रसाद मिलिंद और फैज अहमद फैज, पसंदीदा शास्त्रीय कलाकार भीम सेन जोशी, अमजद अली खान और हरिप्रसाद चौरसिया, पसंदीदा पार्श्व गायक /गायिका लता मंगेशकर, मुकेश और एस.डी. बर्मन, पसंदीदा संगीतकार-सचिन देव बर्मन, पसंदीदा अभिनेता/अभिनेत्री-संजीव कुमार, दिलीप कुमार, सुचित्रा सेन, राखी गुलज़ार और नूतन, पसंदीदा गीत-ओ मेरे माझी, सुन मेरे बंधू रे, कभी कभी मेरे दिल में तथा पसंदीदा भोजन -चाइनीज व्यंजन, झींगा, मंगौड़े, गाजर का हलवा, अलवर मिल्क केक, खिचड़ी, पूरी-कचौरी, दही-पकौड़ी, पराँठा, खीर, मालपुआ और कचौरी।

आपका पैतृक गांव उत्तर प्रदेश के ग्राम-बटेश्वर, आगरा है बाद में उनके दादा पंडित शाम लाल वाजपेयी बटेश्वर से मध्य प्रदेश के मुरैना जिला में चले गए थे। उन्होंने अपनी स्कूली शिक्षा सरकारी उच्च माध्यमिक विद्यालय, गोरखी, बारा, ग्वालियर से प्राप्त की, जहां उनके पिता कृष्णा बिहारी वर्ष 1935 और 1937 तक स्कूल के हेडमास्टर रहें।

अटल बिहारी वाजपेयी पूरे विश्व में अपने तर्क और पूर्ण भाषा के कारण जाने जाते थे वर्ष 1957 मे

लोकसभा में दिया गया अपने पहले भाषण से उन्होंने कई अनुभवी सांसदों को प्रभावित किया था जिनमें से तत्कालीन प्रधानमंत्री पंडित जवाहर लाल नेहरू भी एक थे। उन्होंने (जवाहर लाल नेहरू) उसी समय भविष्यवाणी कर दी थी की यह युवा(अटल बिहारी वाजपेयी) एक दिन भारत का प्रधानमंत्री बनेगा। 1977 में, अटल बिहारी वाजपेयी संयुक्त राष्ट्र को हिंदी में संबोधित करने वाले पहले व्यक्ति बने थे। अटल बिहारी वाजपेयी को भारत के सबसे सफल विदेश मंत्री के रूप में माना जाता था और विदेश मंत्री के रूप में उनके कार्यकाल के दौरान उनकी काफी प्रशंसा भी हुई थीं। उस समय तत्कालीन अमेरिकी राष्ट्रपति जिमी कार्टर लोसो ने 1978 में भारत की यात्रा की थी, जब अटल बिहारी भारत के विदेश मंत्री थे। उनके पूरे राजनीतिक जीवन में, उनपर कोई गंभीर भ्रष्टाचार का आरोप नहीं लगा था। 16 मई, 1996 को, वह भारत के 10वें प्रधानमंत्री बने और वह भी केवल 13 दिनों के लिए, 1998 में 13 महीनों के लिए और फिर 1999 में पूर्ण 5वर्ष की अवधि के लिए। वो भारत के पहले गैर कांग्रेसी प्रधानमंत्री थे जिन्होंने 5 वर्ष की पूरी अवधि की सरकार चलाई थीं। 13 मई 1998 को राजस्थान के पोखरण में उनकी आगवानी में भारत ने एक सफल परमाणु परीक्षण किया इस परीक्षण का नाम आपरेशन शक्ति था। इसके बाद भारत विश्व के कुलीन परमाणु क्लब में शामिल हो गया था। 19 फ़रवरी 1999 को, पाकिस्तान के साथ अच्छे संबंध स्थापित करने के लिए लाहौर तक बस यात्रा की। वह अब तक के एकमात्र सांसद हैं, जिन्हें उत्तर प्रदेश, मध्य प्रदेश, दिल्ली और गुजरात के चार अलग-अलग राज्यों से चुना गया। उन्हें भारत के बेहतरीन कवियों में से एक माना जाता है और उन्होंने कई प्रेरणादायक कविताएँ भी लिखी हैं। उनकी मृत्यु 93 वर्ष की उम्र में 16 अगस्त 2018 को हुई।

अटल बिहारी वाजपेयी दो प्रसिद्ध कविताएं :

आओ फिर से दिया जलाएं

भरी दुपहरी में अंधियारा,
सूरज परछाईं से हारा,
अंतरतम का नेह निचोड़ें,
बुझी हुई बाती सुलगाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

हम पड़ाव को समझे मंजिल,
लक्ष्य हुआ आंखों से ओझल,
वर्तमान के मोहजाल में
आने वाला कल न भुलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

आहुति बाकी, यज्ञ अधूरा,
अपनों के विघ्नों ने घेरा,
अंतिम जय का वज्र बनाने, नव दधीचि हड्डियां गलाएं।
आओ फिर से दिया जलाएं।

गीत नहीं गाता हूं

बेनकाब चेहरे हैं,
दाग बड़े गहरे हैं,
टूटता तिलस्म, आज सच से भय खाता हूं।
गीत नहीं गाता हूं।

लगी कुछ ऐसी नजर,
बिखरा षीषे सा षहर,
अपनों के मेले में मीत नहीं पाता हूं।
गीत नहीं गाता हूं।

पीठ में छुरी सा चांद,
राहु गया रेखा फांद,
मुक्ति के क्षणों में बार-बार बंध जाता हूं।
गीत नहीं गाता हूं।

साभार- मेरी इक्यावन कविताएं

• पहचान से मिला काम थोड़े बहुत समय के लिए रहता है लेकिन काम से मिली पहचान उम्र भर रहती है.

• इंतजार करना बंद करो, क्योंकि सही समय कभी नहीं आता.

हनुमान जी 'बंदर' नहीं थे

लगभग साढ़े नौ लाख वर्ष पहले आर्यावर्त देश इस भारत वर्ष को ही कहते थे, इस देश के कई राष्ट्र, वानर, नाग और असुर ये पाँच राष्ट्र थे। उत्तर में हिमालय तिब्बत आदि पर देव, उसके आस-पास कश्मीर आदि उनके ही अधीन थे। आर्य राष्ट्र उत्तर पूर्व के भाग में फैला हुआ था और बानर राष्ट्र आन्ध्र प्रदेश का कुछ भाग तथा मद्रास व उत्कल प्रदेश था। नागों का राज्य नागपुर व उसके आस-पास का तथा लंका अण्ड़मान तक फैला हुआ था और असुर राक्षस राष्ट्र पंचवटी (नासिक) से लंकर तक तथा मालद्वीप, सोमालिया, बलिद्वीप आदि थे। वहां का राजा रावण था। रावण चार वेद छः शास्त्रों का विद्वान होते हुये राजा बाली था। उसकी राजधानी किश्किन्ध ा नगरी थी। उसके आधीन महेन्द्रपुर और रतनपुर की रियासतें थी। हनुमान जी के दादा प्रहलाद राय विद्याधर थे और उनकी महारानी केतुमती थी, जो रतनपुर में रहते थे। इनके पुत्र का नाम केसरी पवन कुमार था, यह महर्षि अगस्त्य जी के आश्रम में पढ़े थे। यह पक्षियों की आवाज भी बोल लेते थे। इन्होंने कई भाषायें सीख रखी थी। इनका विवाह महेन्द्रपुर के राजा महेन्द्रराय की सुपुत्री अंजनी से हुआ था। पवन केसरी ने अपनी पत्नी से प्रतिज्ञा कर रखी थी इनका विवाह महेन्द्रपुर के राजा महेन्द्रराय की सुपुत्री अंजनी से हुआ था। पवन केसरी ने अपनी पत्नी से प्रतिज्ञा कर रखी थी कि मैं बारह वर्ष तक ब्रह्मचारी रहने के बाद ही सन्तान के लिये आपसे मिलूंगा। एक समय की घटना है बाली और रावण ने कुबेर के साथ युद्ध छेड़ रखा था। उसमें केसरी पवन भी गये थे। तभी ब्रहमचर्य व्रत के 12 वर्ष पूरे होने में एक दिन ही बचा था।

केसरी पवन अपनी सेना के साथ जा रहे थे। रास्ते में रात होने के कारण जंगल में ही सेना को रोककर विश्राम कर रहे थे। इतने में एक पक्षी की आवाज सुनी वह बहुत दर्दभरी थी। केसरी ने मंत्री से पूछा यह कौन सा पक्षी है जो इस समय बोल रहा है? मन्त्री ने कहा यह चकवी अपने नर चकवे के विरह में तड़प रही है। यह सुनते ही पवन को याद आया आज 12 वर्ष पूरे हो गये है, अंजनी मेरे विरह तड़प रही होगी। मंत्री से पूछकर वह अपने विमान से रात को ही अंजनी के महल में गये और अंजनी से मिलकर वापस जाते समय किसी को बिना बताये ही एक अंगूठी अंजनी को देकर वापस चले गये और प्रातः अपनी सेना लेकर युद्ध में रात हो गये। युद्ध 12 महीने तक होता रहा है। पीछे से रानी केतुमती ने जाना कि अंजनी गर्भवती है। रानी ने उनके पिता के पास संदेश भेजा दिया कि लड़की चरित्रहीन हो गई है, इसे आप ले जाओ तो पिता ने भी उसे नहीं रखा। तब विद्याधर राय ने एक दासी बसन्तमाला जो अंजनी के साथ रहती थी, दोनों को जंगल में भेजा दिया। वहां वे दोनों विलाप कर रही थी तभी शिवाजी और पार्वती विमान से जा रहे थे, तब इन्हे जंगल में अकेले देख विमान उतारकर उसने वार्ता करके उनको अपने साथ कैलाश पर ले गये, वहां पर हनुमान जी का जन्म हुआ था। एक दिन झूले में

शेष पृष्ठ 34 पर.....

हाथ पसारे जाओगे

जिस व्यवहार से तुम्हें कष्ट हो रहा हो वैसा व्यवहार दूसरो से भी मत करो क्योंकि शुभ गुणों से व्यक्ति सन्मार्गी और आदर्शवादी बनता है और दुर्गुणों से दुष्ट और पापी। अज्ञान और मोह लोभ भी कष्ट का कारण बनते है।

-सुरजीत सिंह साहनी
कोटा, राजस्थान

"मानुष जन्म दुर्लभ है होत न बारम्बार" पवित्र गुरूवाणी की मनुष्य को जीवन सुधार हेतु लगातार चेतावनीयाँ है। लोभ पर संतोष से, माया पर सरलता से, क्रोध पर शान्ति से और अहंकार पर विनम्रता से विजय प्राप्त होती है क्योंकि घृणा तो मनुष्य के अंदर छिप पाप से ही कि जा सकती है, पापी मनुष्य से नहीं अपितु पापी मनुष्य को तो प्रेम पूर्वक पाप से छुटकारा दिलाते हुऐ सन्मार्ग पर लाना ही परम ध्येय है। जिस व्यवहार से तुम्हे कष्ट हो रहा हो वैसा व्यवहार दूसरो से भी मत करो क्योंकि शुभ गुणों से व्यक्ति सन्मार्गी और आदर्शवादी बनता है और दुर्गुणों से दुष्ट और पापी। अज्ञान और मोह लोभ भी कष्ट का कारण बनते है। इसी कारण ही अनाधिकृत मांग-इच्छा पूरी हो जाने के उपरान्त भी मनुष्य को ही उसका परिणाम भी स्वयं ही भुगतना होता है क्योंकि मनुष्य को अपनी आयु के प्रत्येक मोड़ पर विभिन्न परिस्थितियां का सामना करते रहना ही होता है जो कि स्वयं उसकी ही निर्मित की हुई है-"धर्मराय जब लेखा मांगे क्या मुख लैके जायेगां।" इस सन्दर्भ में एक प्रचलित प्राचिन कथा का वर्णन करना आवश्यक प्रतीत हो रहा है। कथा के अनुसार मनुष्य, गधा, कुत्ता एवं उल्लू चारो प्राणी अपने-अपने जीवन की आयु निर्धारण कराने हेतु ईश्वर के सम्मुख एक साथ ही उपस्थित हुऐ तो परमेश्वर ने उन सब की 40—40 वर्ष की आयु समान रूप से निर्धारित कर दी। समस्त प्राणियों में अपने आप को सर्वश्रेष्ठ मानने वाले लोभी मनुष्य को ईश्वर द्वारा सुनाया गया 40 वर्ष आयु का निर्णय छोटी उम्र का प्रतीत होने पर उचित नहीं लगा इसलिए निर्णय बदलने हेतु ईश्वर से पुनः विचार करने कि प्रार्थना मनुष्य ने की।

पुनः विचार कर एवं अन्य जीव-प्राणी गधा, कुत्ता एवं उल्लू कि सहमती से प्रत्येक की पूर्व में निधारित आयु आधी कर उसमें से बीस-बीस वर्ष कुल साठ वर्ष बचत के मनुष्य कि पूर्व निर्धारित चालीस वर्ष आयु में जोड़कर उसकी आयु सर्वाधिक 100 वर्ष करदी गई। दीर्घायु पाकर मनुष्य ने ईश्वर की सत्य शाश्वत प्रभुसत्ता को ही नकारते हुऐ जीवात्मा का परमात्मा से जो अनादि-अनन्त संबंध है उसको ही तिलान्जली देना प्रारम्भ कर दीया और भौतिक जगत के झूठे, नाशवान, परिवर्तनशील, मिथ्या तत्वों में लिप्त रहकर जीवन के परम पवित्र उद्देश्य से ही भटक गया। परिणाम तो प्रत्यक्ष होना ही है कि अपने जीवन के प्रारम्भिक चालीस वर्ष तो मनुष्य इंसान की तरह पूरे धैर्य और उत्साह से कार्य कर व्यतीत करता है। उसके बाद के बीस वर्ष जो गधे की आयु के उसे मिले है वह अपने परिवार के लड़के-लड़की, बहू, नाती-पोतो आदि के ग्रहस्थी भार को गधे की भाति ही ढ़ोते हुए जीवन व्यतीत करता चला जाता है। फिर कुत्ते की आयु में से प्राप्त बीस वर्ष तो उसको अपने घर के अंदर दरवाजे के निकट ही बिछाई गई चारपाई पर बिताने होते है जहां वह बैठा-2 ही हर आने-जाने वाले को निहारता एवं घूरता रहता है और प्रताड़ित होकर आयु के अस्सी वर्ष तक पहुचता है। आयु के निर्धारित 100वर्ष के अंतिम बीस वर्ष जो उल्लू की आयु से प्राप्त हुए है मनुष्य उल्लू की तरह ही दिनभर खुली

आंख लिये अन्धा सा बैठा रहता है और सारी रात तड़पते हुऐ बिना सोए और बड़-बड़ाते हुए ही अधिकतर समय काटता है। इस प्रकार आयुनुसार इन तीनों प्राणियों के लक्षण आ जाने के उपरान्त भी मनुष्य दया भाव भूलाकर दीन-मूक प्राणीयों (वन्य जीवों) के प्रति घृणा बड़ाता चला जाता है अगर उन पर घोर अत्याचार करने से तनिक भी लज्जा महसूस नहीं होती है। जीवो की शक्ति से अधिक बोझा लाद-लाद कर, पीट-पीट कर, दुत्कार-दुत्कार कर एवं भूखा प्यासा रखकर तरह-2 के अत्याचार मूक दीन जीवों पर करने में ही लोभी लालची मनुष्य ईश्वरीय विधान भूलाकर अपने जीवन को "पापी जीयरा लोभ करत है, आजकाल उठ जायेगा" सार्थक समझने लगा है जो कि उसके अन्यायपूर्ण एवं दुष्ट प्रवृत्ति के दृष्टिकोण का परिचायक है। अच्छी नसीहत ही अमुल्य निधी होती है और शुभ लक्ष्य ही "शुभ करमन ते कबहु न डरो" एवं शास्त्रोनुसार भी "कर्मण्येवाधिकारस्ते माफलेष कदचिन" कर्म शक्ति है। गतिशीलता ही जीवन है जड़ता मृत्यु। निजसुधार ही सर्वेत्तम सुधार है और आत्म नियंत्रण ही सर्वाधिक प्रभावी नियंत्रण है। भूल करना मनुष्य की सहज प्रवृत्ति है किन्तु समय पहले रहते ही भूल सुधार करना तो मानवता का परिचायक है।

साहित्य, गाणित और विज्ञान

-बलिराम महतो 'हरिचेरा'

सच कहा जाय तो साहित्य समाज का दर्पण मात्र ही नहीं, आँखें हैं, आँखें! साहित्य समाज की वर्तमान दशा का मंथन करता हैं, अतीत की तरफ झाँकता है और भविष्य के लिये ही दिशा का निर्देश देता हैं, जिसके कार्यान्वयन का दायित्व विज्ञान अपने कंधे पर लेता है। आज निर्विवाद सत्य है कि साहित्य ने समाज को जगाया, दृष्टि प्रदान की, गणित ने आँकड़ा दिया योजना प्रस्तुत की, विज्ञान ने दायित्व सँभाला और अब धरती पर नये-नये आविष्कारों को स्थापित करने में मनुष्य इतना समर्थ हुआ हैं, जिसके आगे सृष्टिकर्ता को भी दाँतों तले उँगली दबानी पड़ रही हैं। उन्हें भय है कि कहीं एक दिन वह उन्हे भी न छू लें, मात न दे दो। ''गुरू गूड़, चेला चीनी'' वाली कहावत भी कहीं चरितार्थ न हो जाए। परमाणु में ब्रह्मांड समाया हुआ है। शून्य में सृष्टि समायी हुई है। आकाशवाणी, दूरदर्शन, दूरभाष, सी०डी० रिमोट कंट्रोल प्रभृति से होता हुआ मनुष्य कम्प्यूटर, इंटरनेट, ऑन लाइन ..... युग में प्रवेश कर द्रुत गति से अनेक चमत्कारिक रहस्ययुक्त आविष्कारों का अम्बार-सा लगता जा रहा हैं। ऐसा सिद्ध होता हुआ प्रतीत हो रहा है कि जैसे वह प्रकृति के समस्त रहस्यों को उद्घाटित करके ही दम लेगा और इसमें अंकों यानी गाणित का ही सर्वत्र अनिवार्य हाथ रहा है और भविष्य में भी अच्क्षुण रहेगा। इसके बिना मनुष्य एक कदम भी आगे नहीं रख सकता। अंधेरे में कोई कैसे आगे बढ़ सकेगा? सच तो यह है कि यदि साहित्य एक आँख है, तो गणित दूसरी आँख और विज्ञान को निर्विवाद तीसरी आँख मान लेना युक्ति संगत ही हैं। ''अंधकार है वहाँ जहाँ आदित्य नहीं है। मुर्दा है वह देश जहाँ साहित्य नहीं हैं।" और जहाँ गूड़ होगा, वहाँ मक्खियाँ होगी हीं। गाणित, विज्ञान, प्रभृति की तो साहित्य के चिराग के जलते ही पतंगों की तरह इस पर टूट पड़ना ही है इति।

-शारदा सदन, गोकुल मथुरा, पो० रिफातपुर
जिला- भागलपुर, बिहार

आपका खुश रहना ही आपका बुरा चाहने वालो के लिए सबसे बड़ी सजा है?

कहानी

सेवाराम का रोना

-कमल कपूर
फरीदाबाद, हरियाणा

रोने की आवाज से नींद टूट गई। थोड़ी देर पहले ही आँख लगी थी। तमाम विसंगतियों एवं समस्याओं के चलते इन दिनों तनाव अधिक ही रहने लगा। आज व्हिस्की भी नहीं थी और नींद की गोली भी खत्म हो गई थी। अब यह आफत। लेकिन कौन रो रहा है। किसी स्त्री की आवाज तो है नहीं। गौर किया तो आवाज बगल वाले कमरे से आती हुई-सी लगी। उस कमरे मे तो सेवाराम सोता है। उसे क्या हो गया। इस भीषण सर्दी में रजाई से निकलने का मन नहीं हुआ। नींद नही आ रही होगी उसे भी। परन्तु रोने का क्या मतलब हो सकता है। यही सेवाराम अभी दो दिन पहले कह रहा था- मानव जी, इस कड़ाके की सर्दी में सिर्फ रजाई से काम चलने वाला नहीं। शराब, कवाब और शबाब तीनों हों तो कहने ही क्या। कुछ नही तो शबाब यानी गरम मांस तो.....।" कहकर कुटिल मुस्कान बिखेर रहा था वह। पान से सने उसके पीले दाँत बाहर निकल रहे थे।

सोने नहीं देगा सेवाराम। लगता है उठना ही पड़ेगा। धीरे से रजाई उठाता हूँ और बगल में रखा कम्बल ओढ़ लेता हूँ। घुप अंधकार में अपना हाथ भी दिखाई नहीं दे रहा है। किसी तरह बिजली की स्वीच तक पहुंचकर उसे दबाता हूँ, रोशनी हो जाती है। सेवाराम ने कमरे का दरवाजा बंद कर रखा है। पास जाकर गौर फरमाता हूँ। रोना बंद- सा कर चुका है वह। शायद समझ गया कि मैं उठ गया हूँ। अब उठ ही गया हूँ तो चलकर पूंछ लूँ कि क्यों रो रहा था वह। सेवाराम की आवाज लगाता हूँ। कोई जबाब नहीं आता।

"सेवाराम जी, दरवाजा खोलिए। क्या हुआ? क्यों रो रहे थे आप?" उसने दरवाजा खोल दिया। मेरी ही फर्म का क्र्लक सेवाराम। मेरा रूम पार्टनर। यह उसी का मकान है। मुझे किराए के मकान मिल नहीं रहे थे। मिल भी रहे थे तो दूर और काफी मंहगे। सहकर्मी होने के नाते उसने अपने मकान में एक कमरा कम किराए पर मुझे दे रखा था। मैने देखा उसकी आँखों में लालिमा और सूजन थी। आँसू पोंछ चुका था वह। बड़ी मासूमियत से मेरा मुंह देखने लगा था। बाह थामकर उसे पलंग की याद आ गई क्या? क्या हुआ?" उसकी पत्नी का देहान्त हो गया था। एक बेटी थी जो ननिहाल में रहकर परास्नातक की पढ़ाई कर रही थी।

"कुछ नहीं भाई साहब, यूं ही कुछ सोचने लगा तो दिल भर आया। आप नाहक परेशान हुए।" उसने नजर नीची करके जबाब दिया। जरूर वह झूठ बोल रहा है। शायद शरम के मारे बात को दरकिनार कर रहा है। उसे बेपर्दा करने की मंशा से मैं बोला- "मुझसे झूठ बोलना आपको नहीं आता। आज तक मैने कभी आपको रोते हुए नहीं देखा। आज शाम को भी आप उदास दिख रहे थे। कुछ तो जरूर हुआ है। कुछ ऐसा जिसने आपके मर्मस्थल को बेघ डाला है। आखिर ऐसा क्या हो गया?"

"नहीं, नहीं-छोड़िए। क्या करेंगें जानकर। हमारे करम भगवान ने उलटी कलम से लिख दिया है। हम नीच जाति के गरीब लोग दुर्गति सहने के लिए ही बनाए गए है। यूँ ही चलती रहेगी दुनिया।" उसने एकदम उदास स्वर में कहा। मैने देखा वह अब भी रो रहा था भीतर ही भीतर। यूँ तो बड़ी काबिलियत झाड़ता था। भाषण बाजी और गुंटबंदी करना इसे खूब सुहाता था। पीठ पीछे मेरी भी बुराई करने से नहीं चूकता था कितने ही लोगों ने बताया था मुझे। कल दिवाकर सिंह कह रहे थे कि शराब के नशे में सेवाराम एक शाम सड़क पर मुझे गालियाँ भी दे रहा था।

दिवाकर सिंह अक्सर कहते थे- "कैसे रहते है आप इस चमार के साथ। कितने ही सवर्ण लोग हैं इस कालोनी में। निभता कैसे है? इससे अच्छा तो फुटपाथ पर रह लेते। यह हम लोगों का कट्टर विरोधी है। सावधान रहना; कहीं आपके खिलाफ कुछ कर न बैठे। भोजन तो एक साथ कभी मत करना। बड़ा होने के हक से आपको समझाना मेरा फर्ज है।

मैं जैसे-तैसे करके दिवाकर सिंह जैसे शुभचिंतकों को समझा लेता। हालांकि मैं कभी-कभी भोजन भी सेवाराम के साथ कर लेता था। उसके साथ बाजार जाना, पिक्चर जाना तो आम बात थी। उसे देखने-स्वीकारने का मेरा नजरिया औरों से थोड़ा अलग था। बात सेवाराम के रोने की हो रही थी। मैं बड़े कोमल लहजे में उससे पूछता हूँ।

''कम से कम मुझे तो बता दो। मैं किसी से कहने वाला नहीं हूँ। आज तक आपकी कोई भी निजी बात मैंने किसी से नहीं कही है। अपनी सारी बातें आप मुझसे कर लेते हैं। कह देगें तो आपके दिल का बोझ कुछ हल्का हो जायेगा। कोई प्राइवेट बात ही होगी जिसने आपको रूलाया है। वर्ना आज तो आपका राज है। जो चाहते हैं होता है और जो चाहेंगे होगा भी। आपके भाग्य को भगवान ने उलटी कलम से नहीं लिखा है। आप लोगों की किस्मत तो लहलहा रही हैं।''

जैसे किसी कुएँ के खंडहर से स्वर फूटा हो। सेवाराम लम्बी सांस लेकर धीरे-धीरे बोलने लगता है-''हमारा राज क्या आयेगा भाई साहब। राज तो आज भी आप लोगों यानी बड़े लोग का ही है। मेरी जाति में भी जो बड़े लोग हैं उनका राज है जब ये लोग सामान्य से बड़े हो जाते है तो आप लोगों की ही तरह असामान्य व्यवहार हमसे करने लगते है। आप लोगों ने हमें अछूत, गुलाम, गंदा समझा। हमारे बाप-दादाओं को गाली दी, उन्हें पीटा भी। हमारे पूर्वज आपकी जूतियों के नीचे रहे। अब हमारी जाति का ही मुखर व्यक्ति कुछ बनने के बाद हमसे घृणा करने लगता है। अपने को ऊँचा मानकर हमें नीचा दिखाता है। हमें दुत्कार कर हमारा अपमान करता है।''

उसका व्यथित स्वर सुनकर मुझे भीतर से थोड़ा सुकून मिला। बहुत जातिवादी फिलॉसफी झाड़ता था। आज इसे होश आ रहा है। लेकिन मैंने अपने चेहरे पर अत्यंत कोमल भाव कायम रखकर पूछा- ''आखिर हुआ क्या? आप इतने दुःखी और हताश क्यों हो रहे हैं? ज्ञान प्राप्त करके लोग सुखी होते है, आप तो रो रहे हैं; हुआ क्या है?''

''आज पासवान जी, फर्म के पार्टनर ने मुझे बहुत गाली दी। पिटाई छोड़कर बाकी सारे करम कर दिया। चपरासी के सामने उन्होंने मुझे इसलिए बेइज्जत किया क्योंकि उनके बच्चों को मैने ट्यूशन पढ़ाना बंद कर दिया। एक तो पैसे नहीं देते थे, ऊपर से जरा भी देर हो जाए तो मैम लताड़ लगाती थी। मेरे प्रति बच्चों का व्यवहार भी नौकर जैसा था। एक कप चाय तक कभी नहीं मिली। शिक्षक का सम्मान मिलना तो दूर मुझे बंधुआ मजदूर समझा जाता था।''

सेवाराम का चेहरा लाल हो गया। वह बोलते-बोलते उत्तेजित-से हो गए थे। मैने कहा- ''तो इसके लिए घर आकर औरतों की तरह रोने की क्या जरूरत थी। मर्दो की तरह जबाब देना चाहिए था पासवान को। आप भी गाली देते, मारते साले को। जो होता देखा जाता। कल लेते हैं उसकी खबर।''

''सही कह रहे हो भाई, उस समय मुझे ऐसा ही करना था। पता नहीं मुझे क्या हो गया जो मैं चुप रह गया। चलो जाने दो, साला है तो अपनी ही जाति-बिरादरी का। मुझे कुछ नहीं करना है।''

वह खड़ा हो गया और कमरे में टहलने लगा। मुझसे कुछ बोला न जा सका। मैं कमरे से बाहर निकला तो उसने किवाड़ सटा ली। उस दिन के बाद सेवाराम कभी मुझसे सहज नहीं हो सका। मेरा सामीप्य अब उसे अच्छा नहीं लगता था। मुझसे वह आँखें भी नहीं मिला पाता था। थोड़े दिन बाद बोल चाल भी बंद हो गई। बहुत जरूरी होने पर ही वह मुझसे कोई बात करता। एक मकान में यूं रहना मेरे लिए असंभव हो गया। मैने भाग दौड़ करके अपना तबादला करवा लिया। वर्षों गुजर गए। यादें भी धुंधली होने लगी।

आज अहफिस से घर आया तो पत्नी ने एक छोटा सा डिब्बा देते हुए कहा- ''आपके कोई दोस्त आए थे सरगुजा से। सेवाराम नाम बता रहे थे। वही दे गए है यह भेंट।''

''अरे! सेवाराम? उसके बारे तें तो सब कुछ बता चुका हूँ तुमको। भूल गई? अरे भई; हम सहकर्मी थे। मैं उसके साथ उसी के मकान में रहता था। देखूँ क्या है इस डिब्बे में?''

मैने डिब्बा खोला तो उसमें दो अंगूठियाँ थी। एक स्टील की और दूसरी सोने की। स्टील वाली मेरी है, जिसे देखते ही मैंने पहचान लिया। किसी प्रदर्शनी में सेवाराम ने ही जिद करके खरीदवाई थी। सरगुजा छोड़ने से कुछ दिन पहले उसने इसे अपने लिए मांग ली थी। लेकिन यह सोने की अँगूठी? मैने पहनकर देखा। बिल्कुल स्टील वाली अँगूठी की नाप की बनी हुई। शायद इसीलिए उसने मुझसे मेरी अँगूठी मांग ली थी।

डिब्बे में एक चिट्ठी भी थी। सेवाराम ने लिखा था- ''मानव भाई, मुझे माफ करना। मैं आपसे नार्मल बिहेव न कर पाने का अपराधी हूँ। मैंने ऐसा नहीं चाहा था, मगर मुझे जाने क्या हो गया था। मेरे साथ रहने के दौरान मेरे प्रति आपके कुछ पैसे भी खर्च होते रहते थे। उन्हें आज लौटाकर मैं और तुच्छता नहीं दिखा सकता। आपके मस्तिष्क में हमारी याद बनाए रखने के लिए एक अँगूठी भेंट कर रहा हूँ। आपका पुराना दोस्त-सेवाराम।''

भाषा का अस्तित्व लिपि पर अवलंबित है : प्रो. गुरूमीत सिंह

नई दिल्ली। भाषा का अस्तित्व लिपि पर अवलंबित होने से किसी भी भाषा को यदि जीवित रखना है तो उसकी लिपि ही अनिवार्य शर्त होती है। इस आशय का प्रतिपादन पांडिचेरी विश्वविद्यालय, पुडुच्चेरी के कुलपति प्रो. गुरूमीत सिंह ने किया। नागरी लिपि परिषद, नई दिल्ली के तत्वावधान में पुडुच्चेरी में आयोजित 44वें अखिल भारतीय नागरी लिपि सम्मेलन में उद्घाटक के रूप में वे अपना उद्बोधन दे रहे थे।

परिषद, नई दिल्ली के अध्यक्ष पूर्व कुलपति डॉ.प्रेमचंद पतंजलि ने समारोह की अध्यक्षता की। प्रो. सिंह ने आगे कहा कि सभी भारतीय भाषाओं के मध्य समन्वय की भूमिका निभाने वाली नागरी लिपि के प्रचार, प्रसार व विकास के क्षेत्र में नागरी लिपि परिषद सराहनीय कार्य कर रही है। मुख्य अतिथि डॉ.अनिल शर्मा 'जोशी', उपाध्यक्ष, केंद्रीय हिंदी शिक्षण मंडल, आगरा ने अपने मंतव्य में कहा कि नागरी लिपि केवल लिपि नहीं है, बल्कि देश को एकसूत्र में बाँधने वाली महत्वपूर्ण कड़ी है। दुख इस बात का है कि भारतीय युवा अपनी भाषा के प्रति उदासीन हैं।

विशिष्ट अतिथि डॉ.अश्विनी कुमार, निदेशक, रोगवाहक नियंत्रण अनुसंधान केंद्र, पुदुच्चेरी ने कहा कि हिंदी और देवनागरी लिपि हमारे लिए पवित्र नदी गंगा के समान है। हिंदी और नागरी लिपि हमारे खून में होने से वे हमारे लिए सरल माध्यम है।

नागरी लिपि के महामंत्री डॉ. हरिसिंह पाल ने बीज भाषण में कहा कि एक संपर्क लिपि के रूप में नागरी लिपि का स्वीकार करना बहुत जरूरी है। पांडिचेरी में पचपन भाषाएँ बोली जाती है तथा फ्रेंच भाषा भी वहाँ प्रचलित है।

नागरी लिपि के अध्यक्ष डॉ.प्रेमचंद पतंजलि ने अध्यक्षीय समापन में कहा कि समस्त भारतीय भाषाओं को एकसूत्र में बाँधना जरूरी है। भारत आध्यात्मिक नेतृत्व की भूमि है। परिषद के कार्याध्यक्ष, डॉ. शहाबुद्दीन नियाज मुहम्मद शेख, पुणे ने भी अपना मंतव्य प्रस्तुत किया।

इस अवसर पर प्रो. गुरूमीत सिंह को राष्ट्रीय नागरी सम्मान, डॉ. अनिल शर्मा, 'जोशी', को डॉ. परमानंद पांचाल राष्ट्रीय नागरी सम्मान, डॉ. राजलक्ष्मी कृष्णन, चेन्ने को आचार्य विनोबा भावे राष्ट्रीय नागरी सम्मान, डॉ. शहाबुद्दीन शेख को चौधरी चरण सिंह राष्ट्रीय नागरी सम्मान, डॉ. प्रभु चौधरी, उज्जैन को संत गंगादास राष्ट्रीय नागरी सम्मान तथा डॉ.हाशम बेग मिर्जा महाराष्ट्र को पं. गौरी दत्त राष्ट्रीय नागरी सम्मान, डॉ. तुंबम रीवा, अरूणांचल प्रदेश को न्यायमूर्ति शारदाचरण मित्र राष्ट्रीय नागरी सम्मान से गौरवान्वित किया गया।

समारोह में डॉ. वीरेंद्र सिंह, डॉ. गंगाधर वानोडे, कर्मवीर सिंह, डॉ. विनोद बब्बर, डॉ. गोपाल, उमाकांत खुबालकर, डॉ. पुष्पा पाल, श्रीमती सरोज शर्मा, श्रीमती अंशुमाला यादव, आचार्य ओम प्रकाश, डॉ. ऋतुराज निरंजन, श्रीमती किसलय शर्मा, डॉ. बाबा कानपुरी, प्रो. कार्तिकेय शर्मा, श्री मोहन द्विवेदी, डॉ. निशा मुरलीधरन, डॉ.नागनाथ भेंडे, डॉ. के. कविता, अक्षत गोयल आदि महानुभावों का सम्मेलन के विभिन्न सत्रों में सक्रिय सहभाग रहा। संचालन डॉ. एस पदमप्रिया तथा डॉ. जयशंकर बाबू ने किया।

माँ का घर

दूर अति दूर से आई बेटी,
घर के आँगन में आते ही,
बन जाती नन्हीं चिड़िया।
माँ आज भी पुकारती उसे,
उसी नाम से, जो सहेजा था
उसके पैदा होने से पहले।
पुकार माँ की ले आई अपने संग
अनगिनत यादें,
जिन्हें रखा है उसने
संभालकर दिल के तहखाने में,
भाई का उसका नाम बिगाड़कर
बुलाना,
मुहल्ले वालों का उस नाम
को छोटा करना
और बापू का साथ में
'बेटा' लगाकर बुलाना।
कितनी चिढ़ जाती थी
जब पता चला था
कहलेज में दोस्तों को
उसका वो नाम।
क्यूँ तड़पी है आज जब पुकारा माँ ने
ले उसका वो बचपन का नाम,
क्यूँ सुनना चाहती है बार-बार
बचपन का उसका वो नाम।

-शबनम शर्मा,
माजरा, जिला-सिरमौर,हि.प्र.

बेटी

मेरा जन्म हुआ
इसी जीवन में पुनः
अपनी बेटी के साथ
मैं बड़ा हो रहा हूँ
मैं सीख रहा हूँ
मैं बढ़ रहा हूँ
अपनी बेटी के साथ।
इस नये जन्म में
पुराने जन्म के दुख
हो रहे हैं धूमिल
मैं पिता बना
मैं पुत्र बना
नवजीवन रचा
और पाया नया जन्म
आदमी कभी नहीं मरता
अपने जीवन में ही
रच देता है दूसरा जीवन
सृष्टि निर्माण में
देता रहता है सहयोग
जीवन चलता रहता है
जीवन खत्म होने के बाद भी।

-देवेन्द्र कुमार मिश्रा
चन्दनगाँव, छिन्दवाड़ा, म०प्र०

आशायें

हारना तो मैंने सीख ही नहीं
लोगों ने तो कि बहुत
मुझे हराने की कोशिशें
हारी तो मैं फिर भी नहीं
पर टूटती तो जरूर हूँ
सोचती हूँ कब तलक
ये हौंसला साथ रहेगा मेरे
कब तलक कोशिश करूँगी
नसीब को हराने की
कोई तो हो जो
थाम ले हाथ मेरा
खड़ा हो संग मेरे
न रूप है न रंग है
सोने-चाँदी की खनक
भी तो है नहीं साथ मेरे
पर हीरे-सी चमकती आशायें
दिल में लिए फिरती हूँ
कोई तो जौहरी मिलेगा
जो मेरी आशाओं को
कोहिनूर बना देगा।

-कीर्ति श्रीवास्तव
संपादक-'सहित्य समीर दस्तक',
कोलार रोड़, भोपाल, म०प्र०

बदलाव

स्वतंत्रता की
जंग के समय
वे कहते थे
भारत महान हैं!
और अब
आजादी के बाद
वे कहते हैं
घोटाला महान हैं।।

विचार

बढ़ती मँहगाई पर
मेरी पत्नी ने किया
कई महीने बिचार
अन्त में बोली
राजनीति से अच्छा नहीं
और कोई व्यापार।।

-अनिल द्विवेदी ''तपन''
निकुंज'' सिपाही ठाकुर, कन्नौज

- **जिंदगी अगर अपने हिसाब से जीनी है तो कभी किसी के फैन मत बनो.**
- **कोशिश करना न छोड़े, गुच्छे की आखिरी चाबी भी ताला खोल सकती है.**

गीत

जब अक्षर हुए हमारे, जीवन में फैले उजियारे
शिक्षा पहुंची आंगन द्वारे, सबके बिगड़े भाग्य संवारे
अक्षर है जीवन के साथी, अक्षर दीपक अक्षर, बाती
शिक्षा सुख के फूल खिलाती, सबको अपना हक दिलवाती
अक्षर मन के भाव सुधारे, नफरत को ये सदा ललकारे
निर्मल सी हो गई जिन्दगी, शब्दों में खो गई जिन्दगी
दूर हुई दुनिया की गन्दगी, प्रेम से करो प्रभु की बन्दगी
ईश्वर है सबसे न्यारे, जो दिखाते स्वर्ग के नजारे
जीने के नित्य नये तरीके, अक्षर से हमने सीखे
हंसी खुशी में हर पल बीते, रहे प्रेम का प्याला पीते
मिल गये अब सच्चे सहारे, नहीं भटकेंगे हम बंजारे
जब भी हमने जोड़े अक्षर, भ्रम मिटा भीतर बाहर
प्रगति का अब मिला अवसर, नहीं झुकेगा अपना भी सर
मिट गये अज्ञान अंधियारे, दूर हटे बादल कजरारे
अक्षर को परमेश्वर मानो, शिक्षा की महिमा पहचानो
शब्दों को जानो पहचानो, मेरा कहा आज तुम मानो
शीघ्र ही कष्ट मिटेंगे सारे, ईश्वर ने किये इशारे।।

- रामचरण यादव
सद्भाव भवन सदर बाजार, बैतूल, म०प्र०

पानी

देखौ भैया हरौ जो, देने सब खौं ध्यान।
पानी खौं ना कोउ कउँ, हो पावै हैरान।।
हो पावै हैरान न पानी क बिनु कोऊ।
प्यासन ना मर पावें अपने ढ़ोर बछेऊ।।
पशु पक्षी जलजीव मनुस सब जल से लेखौ।
अपुनइँ जैसी प्यास सबइ जीवन में देखौ।।

-लक्ष्मी प्रसाद गुप्त 'किंकर'
ईशानगर, छतरपुर, म०प्र०

गीत

धरती अम्बर करते हैं गुनगान शहीदों का।
कैसे भूले गा यह देश अहसान शहीदों का।।
जिन्होंने अर्पण कर दी अपने देश के हेतु जवानी।
जिन्होंने कारागार के तम से कभी हार न मानी।
जिन्होंने फाँसी की रस्सी भी जुल्फ यार की जानी।
सागर भी था जिन के वास्ते घुटने-घुटने पानी।।
कभी व्यर्थ नहीं जाता बलिदान शहीदों का।
कैसे भूले गा यह देश अहसान शहीदों का।
कितने भाई छीन ले गयी वो खूनी बैसाखी।
कितनी बहिनों के हाथों में रही सिसकी राखी।
कितनी माताओं ने दे दी बेटों की कुर्बानी।
इस को भूल नहीं पायेगा यह सतलज का पानी।।
अपने देश की आजादी है दान शहीदों का।
कैसे भूलेगा यह देश अहसान शहीदों का।
सभी बाराती दूल्हे जैसे सभी के सर पर सेहरे।
मन में आग लगी है ऐसी, चमक रहे हैं चेहरे।
हथकड़ियों के साज बज रहे रणचण्ड़ी का गाना।
लाने चले मौत की दुल्हन पहन केसरी बाना।।
खून से सज कर आया है बलिदान शहीदों का।
कैसे भूले गा यह देश एहसान शहीदों का।।

-सरदार पंछी
कोटला रोड़-खन्ना, पंजाब

मुक्तक बंद

करेंगे क्या ये चारागर, जो इक बीमार कर लेगा
दिखावे की ही सूरत में, कोई जो प्यार कर लेगा
यकीनन भूखों मरने के, जुटाता है वो खुद सामां
जो अपनी हसरतों को बस, महज खुद्दार कर लेगा।
नई नस्लों के, कुत्ते भी, नहीं चाटेंगे, तलवे ये
चमकते चांद, से तलवों का, जो किरदार कर लेगा
खुशामदखोर है दुनिया, विधाता की वही जाने
इसी के दम पर है संभव, कि कारोबार कर लेगा
बिना उसकी इजाजत के, कहीं पत्ता नहीं हिलता।
खबर है किसको क्या काल की? कब अवतार कर लेगा।
गरूड़, पुष्पक औ ऐरावत, बुलाते रह गये ऊपर
'समीर' चलते हुये पैदा, उमर बेकार कर लेगा।।

-पं० मुकेश चतुर्वेदी 'समीर'
नरयावली नाका वार्ड, सागर, म०प्र०

महिलाओं की वर्तमान वेशभूषा कितनी जायज

महिलाओं को हमेशा शालीन वस्त्र पहनना चाहिए

वेशभूषा वह चीज जिससे हर इंसान जुड़ा हुआ है। अपनी-अपनी सभ्यता-संस्कृति के हिसाब से भी और आधुनिक हो रही सभ्यता में अपने विचारों के हिसाब से भी। महिला चाहे आधुनिक हो या परंपरागत अपने पहनावे के प्रति स्वयं जिम्मेदार होना चाहिए किसी भी महिला का पहनावा ना ही फहरता है, ना ही आधुनिकता, मात्र वह पहनावा है, जिसमें कई बार वह खुद को सहज महसूस करती है तो कई बार आकर्षक महसूस करती है। हर महिला सहज, सुरक्षित और आकर्षक दिखना चाहती है यह उसका हक है।

आज के युग की सफल नारी वह जो एक तरफ तो अपनी संस्कृति से जुड़ी रहे और दूसरी तरफ जरूरत पड़ने पर हवाई जहाज और रॉकेट भी उड़ा सके। मेरे कहने का अर्थ यह है कि परम्परा का पालन करते हुए भी अपने दैनिक एवं भौतिक कर्तव्यों से मुंह न मोड़े। अब ऐसी स्त्री जो हवाई जहाज उड़ाएगी तो अवश्य ही वह पेंट शर्ट पहनेगी। लेकिन वही महिला जब घर में त्यौहार मनाएगी तो शौक से भारतीय परिधान पहनेगी। एक सफल अध्यापिका, बैंक कर्मी या साइंटिस्ट महिला जिस गरिमा से भारतीय परिधान जैसे-साड़ी या सलवार सूट पहनती है, उसी गरिमा से एक प्रोफेशनल आईटी कंपनी की महिला कर्मचारी पेंट टॉप, फुल लेंथ स्कर्ट तथा जींस के साथ टॉप या कुर्ती पहन सकती है। इसके अलावा फिल्म या टीवी लाइन से जुड़ी महिलाएं भी आमतौर पर इन्हीं कपड़ों में खुद को आरामदायक महसूस करती है। इनके शूटिंग के दौरान पहने जाने वाले कपड़े इनके काम का हिस्सा मात्र है।

आज की महिला जानती है कि उसे कब और कहां क्या पहनना चाहिए। यह महिलाओं का अपना आत्म निर्णय है। लेकिन यह मेरी व्यक्तिगत राय है कि महिलाओं को हमेशा शालीन वस्त्र पहनना चाहिए ऐसे कपड़े जो सबको लुभाते हो। भड़कीले, शोख व अंग दिखाऊ कपड़े महिलाओं की गरिमा को धूमिल करते हैं।

आज की महिला को घर परिवार और ऑफिस में संतुलन बनाकर चलते हुए जैसा देश वैसा भेष वाली उक्ति अपनाना चाहिए। इसमें परिवार भी सहयोग करता है।

-डॉ० सुधा चाकरे, ग्राम-जलकोटी, पोस्ट-खराड़ी, तहसील-महेश्वर, जिला-खरगोन, मध्यप्रदेश

वेशभूषा ऐसी न हो कि मानव को दानव बना दे।

हम भारत देश में रहते हैं। जहां औरत को माता, देवी कहकर पूजा जाता हैं। इसलिए हमे जो सेहत के हिसाब से जो हमे आराम दे वही परिधान पहनना चाहिए। आप अगर माँ हैं तो आपका प्रभाव पूरे घर पर पड़ेगा, अगर आप बहन है तो पिता, भाई की इज्जत आप के हाथ है। इसलिये हमे सोच समझकर समाज व संस्कार इन सबको ध्यान में रख कर पहनना चाहिये। मॉडल, अदाकारा या पाश्चत्य देश से है तो आप कैसे भी वेश् धारण करें। आज हम आजादी, बदलाव की बात करे तो, औरत मन मर्जी से पहन सकती हैं। बस किस समय, किस स्थान, किसके साथ जा रहे है, यह बहुत महत्वपुर्ण है। अन्यथा भीड़भाड़ हर जगह है। सुंदर बाला हो, वस्तु हो या प्रकृति हो, वह मन को प्रसन्न करती है। आखों को दोष क्यों दे?

अंत में कहना चाहुंगी, अगर आपकी वेशभूषा ऐसी न हो कि मानव को दानव बना दे। एक सुन्दर स्त्री का मोहक रुप पूर्ण वेश में ही भाता है। वेश भूषा ठीक ना हो तो, सड़क पर चलने वाले अनजान कि भी, नजर

डगमग जाए। इसलिए वर्तमान वेशभूषा ७५प्रतिशत जायज् हैं। ऐसा मुझे लगता हैं।

-मिस मुमताज इमाम पठान, अहमदनगर, महाराष्ट्र

रील और रियल लाइफ में अंतर होता है

आज की वेशभूषा पर केवल इतना ही कहना चाहूंगी की आज हर वर्ग एवं उम्र की महिलाएँ यदि साफ शब्दों में कहूँ तो रील और रियल लाइफ में अंतर ही नहीं समझना चाहतीं क्योंकि सजना संवरना अलग बात है और सजने संवरने तथा फैशन के नाम पर फूहड़ता एवं अर्धनग्नता और बातें हैं। हमारी संस्कृति और संस्कार हमें सुंदर दिखने की अनुमति देती है निर्लज्ज दिखने की नहीं।

-श्रीमती संतोष शर्मा 'शान', हाथरस, उत्तर प्रदेश

शिकवे गिले बढ़ने लगे

बदनियत, स्वच्छंदता के सिलसिले बढ़ने लगे।
यूँ हुए आजाद हम, शिकवे गिले बढ़ने लगे।।
राजनैतिक खेल सत्ता के लिए खेले गये,
देश में अपराधियों के दृढ़ किले बढ़ने लगे।
बस्तियां गंदी गरीबी यूँ हटायी देश से,
हर तरफ विस्थापितों के काफिले बढ़ने लगे।
खान गहरी, बाँध ऊँचे और वन बौने किये,
पाँव पर मारी कुल्हाड़ी, जलजले बढ़ने लगे।
हो रही हिन्दी उपेक्षित, रौब इंग्लिश का जमा,
दिन बदिन कान्वेन्टों में, दाखिले बढ़ने लगे।
सून्न बिखरे एकता के, देश टुकड़ों में बँटा,
मानसिक संकीर्णताओं के जिले बढ़ने लगे।
यूँ तो मंगल, चाँद, सूरज से बढ़ी नजदीकियां,
आदमी से आदमी के फासले बढ़ने लगे।।

-आचार्य भगवत दुबे

पिसनहारी- मढ़िया के पास, जबलपुर, म० प्र०

दोहे

राजनीति के ताल में, पड़ा हुआ है जाल।
नेता मछुवारे बने, हड़प रहे सब माल।।
नेताओं की मीत अब, फिसले बहुत जबान।
जिसको सुनकर पक रहे, अब जनता के कान।।
लोकतंत्र में हो रहा, कर्ज धनी का माफ।
करता गरीब खुदकुशी, कैसा यह इंसाफ।।
बिन संकट के दौड़ती, महंगाई की रेल।
इसके पीछे चल रहा, नेताओं का खेल।।
उड़ा रहे जनतंत्र का, नेता आज मजाक।
जिसके चलते कट रही, मीत देश की नाक।।
रेल किराया बढ़ गया, बढ़े भाव अब तेल।
खेल रही सरकार ही, अब जनता से खेल।।
घोटालो पर मीत क्यों, लगती नहीं लगाम।
लगता भ्रष्टाचार में, नेता लिप्त तमाम।।
राजनीति का झुंझुना, बेशक बना गरीब।
रोहित खुद सरकार ही, उसके नहीं करीब।।
कैसी अपनी नीतियाँ, कैसा यार विधान।
गुंड़े-नेता बन गये, जेल में मेहमान।।
मीत शहादत का करे, नेता अब अपमान।
फिर भी कहते लोग है, मेरा मुल्क महान।।

-रोहित यादव

पत्रकार, सैदपुर, मंड़ी अटेली, हरियाणा

प्रेम की मय

प्रेम की मय तो, प्रिय मैं था पिये,
कदम सीढ़ियों पे, आपके क्यूँ लड़खड़ाये।
मैं मौन द्रष्टा हूँ, सिर्फ इस लिये,
राज प्रीत का, कही खुल न जाये।
बे खुदी में कदम आपके प्रिय,.... त्र
खुद -ब-खुद ही लड़खड़ाये।
''कही गिर जाती मैं,..... तो हो जाती छुट्टी,,
आप बे वजह शिकवा मुझसे किये।
आप ठीक कहती है। खता मैरी ही थी,
''विद्रोही,, नजर जो आपसे मिलाये।
मैं इन्सा हूँ। कोई फरिश्ता नहीं,
नादाँ समझकर माफ कर दीजियें
नोटः- उक्त रचना पूर्णः मोलिक, आप्रकाशित है

-कुँवर वीरेन्द्र सिंह ''विद्रोही''

सिकन्दर कम्पू, लश्कर, ग्वालियर, म०प्र०

राष्ट्रीय गोष्ठी

परिवार के विघटन की समस्या भारतीय संस्कृति के लिए घातक : श्री हरेराम बाजपेयी

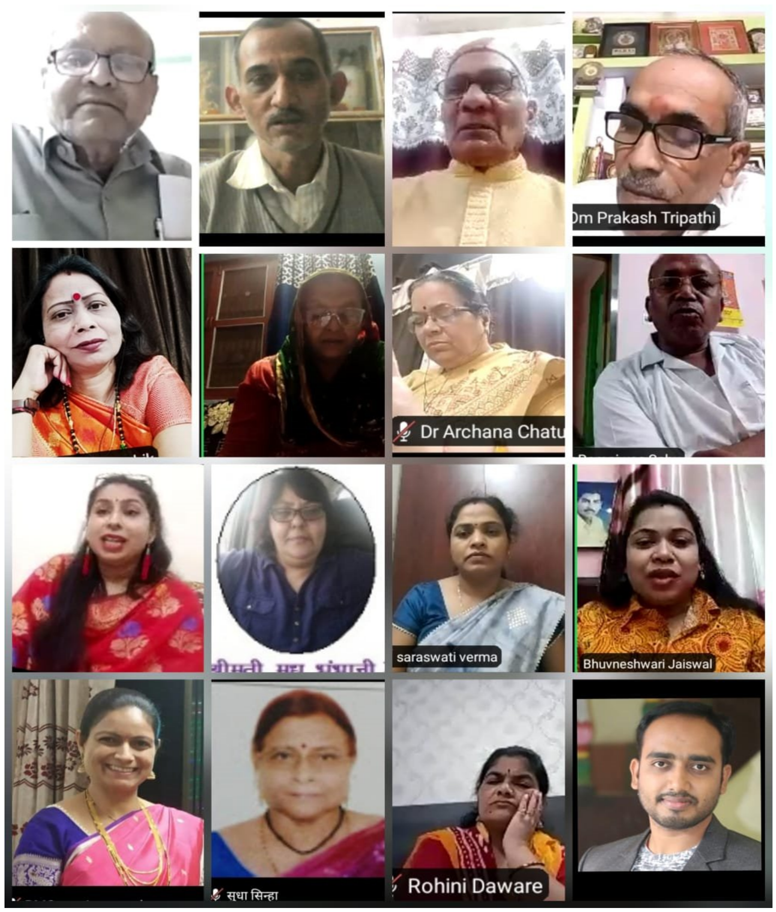

पाश्चात्य संस्कृति के अंधानुकरण के कारण परिवार के विघटन की समस्या भारतीय संस्कृति के लिए घातक सिद्ध हो रही है। यह प्रतिपादन हिंदी परिवार, इंदौर के संस्थापक, अध्यक्ष श्री हरेराम बाजपेयी ने किया। विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज के तत्वावधान में "टूटते परिवार - कारण व निवारण" विषय पर आयोजित राष्ट्रीय आभासी संगोष्ठी में वे अपना उद्बोधन दे रहे थे। संस्थान के अध्यक्ष डा. शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे, महाराष्ट्र ने गोष्ठी की अध्यक्षता की। श्री बाजपेयी ने आगे कहा कि परिवार को टूटने से बचाने के लिए हर परिवार में आपसी सामंजस्य, निजी स्वार्थ व सुख का त्याग, कर्तव्य परायणता, प्रेम, विश्वास और संस्कारों का होना बहुत जरूरी है।

संस्थान के सचिव डा.गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी ने अपने प्रास्तविक भाषण में कहा कि परिवार के टूटने में एक अहम कारण मैके का बेटी के ससुराल में आवश्यकता से अधिक दखल भी हैं। परिणामतः टूटते परिवार के कारणों पर विचार करें तो मुख्यतः संयुक्त परिवारों का विघटन, अहम एवं समझौता वादी दृष्टिकोण का अभाव तथा संस्कारों की कमी भी अत्यधिक मात्रा में खटकती है।

डॉ. नजमा बानू मलिक, नवसारी, गुजरात ने कहा कि टूटते परिवार आज के दौर की एक बड़ी चुनौती है। आजीविका, उच्च शिक्षा, भौतिकता वादी अभिमुखता, व्यक्तिगत अहंकार, पारिवारिक मूल्यों का ह्रास, स्त्रियों की आर्थिक स्वतंत्रता आदि परिवार के टूटने का कारण माने जा सकते हैं। सद्भभाव, समर्पण, स्नेह, सहनशीलता आपसी सौहार्द और सहयोग से परिवार को टूटने से बचाया जा सकता है।

प्रा. मधु भंभानी, नागपुर, महाराष्ट्र ने अपने मंतव्य में कहा कि वैचारिक मतभेद, बेमेल आयु, रूढियों, परंपराएं, दहेज, पाश्चात्य सभ्यता का प्रभाव,अहं, सहनशीलता की कमी, आपसी तालमेल का अभाव

इत्यादि कारण हो सकते हैं परिवार टूटने के। परंतु इसका निवारण हम पर निर्भर करता है।

श्री ओम प्रकाश त्रिपाठी, सोनभद्र, उ०प्र० ने कहा कि आज परिवार की संरचना में आंच आ गई है। अपनों के बीच परायेपन का एहसास पसरा हुआ है। विश्वास की जगह संदेह स्थापित है। कोई किसी को समझने की कोशिश नहीं करता और मर्यादाओं संस्कारों से अलग होकर जीवन दर्शन को भी बदल दिया। जिससे मानवता तार तार हो रही है।

श्रीमती वंदना शुक्ला, प्रयागराज ने कहा कि महत्वकांक्षाये, अंह, संवाद का ना होना, मोबाइल, रोजगार, शहरी आकर्षण भी टूटते परिवार के कारण है।

डा. अर्चना चतुर्वेदी, इंदौर, मध्य प्रदेश ने अपने उद्बोधन में कहा कि टूटते परिवारों का प्रमुख कारण है बढ़ती हुई आधुनिकता हम आधुनिकता की अंधी दौड़ में परिवारों के महत्व को भूल गए हैं दूसरा दूसरा कारण है दिखावा हम बैठ के दिखावे में फंस कर अपने मूल स्वरूप को भूलते जा रहे हैं। इस दिखावे के चक्कर में हमारे बीच का प्रेम खत्म होता जा रहा है तीसरा कारण है असहिश्णु होना आज का मनुश्य किसी का भी हस्तक्षेप अपने जीवन में नहीं चाहता।

डा. रामनिवास साहू, बिलासपुर, छत्तीसगढ़ ने कहा कि फिल्म व मीडिया परिवार टूटने के प्रमुख कारण है।

डा. शहाबुद्दीन नियाज मोहम्मद शेख, पुणे, महाराष्ट्र ने अध्यक्षीय समापन में कहा कि, परिवार का बिखराव बहुत बड़ी आपदा के समान है, जिसमें लोगों के साथ रिश्तों में भी बिखराव आता है। परिवार टूटने के पीछे कोई एक कारण नहीं, अपितु परिस्थिति जन्य अनेक कारणों से परिवार टूटने लगते हैं। परिवार झुकने से चलता है अकड़ने से कदापि नहीं। आज की पीढ़ी केवल पति पत्नी और अपने बच्चे को ही परिवार मानने लगी है।

कार्यक्रम का प्रारंभ डा. सरस्वती वर्मा की सरस्वती वंदना से हुआ। श्रीमती भुवनेश्वरी जायसवाल, रायपुर ने स्वागत भाषण दिया।

विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान प्रयागराज, छत्तीसगढ़ राज्य प्रभारी तथा संयोजक डा. मुक्ता कान्हा कौशिक रायपुर ने आभासी संगोष्ठी का सुंदर व सफल संचालन किया तथा प्रा. लक्ष्मीकांत वैष्णव, चांपा, जांजगीर ने धन्यवाद ज्ञापन किया। गोष्ठी में डॉ० भरत त्रयंबक शेणकर, डॉ० सुधा सिन्हा, रामचंद्र स्वामी, डॉ० रोहिणी डावरे, डॉ० अन्नपूर्णा श्रीवास्तव, हेमलता लखमल इत्यादि उपस्थित रहे।

क्या आप लिखते हैं?

अपने काव्य संग्रह, कहानी संग्रह, आलेख संग्रह इत्यादि के प्रकाशन हेतु संपर्क करें।

विशेष आकर्षण

1.प्रकाशन मात्र लागत मूल्य पर

2. बिक्री की व्यवस्था

3.प्रचार-प्रसार की व्यवस्था

4.विमोचन की व्यवस्था

5. ऑन लाईन/ऑफ लाइन संस्करण में पुस्तक का प्रकाशन

विस्तृत जानकारी के लिए सम्पर्क करेंः

प्रसार सचिव, विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान, एल.आई.जी-93, नीम सरॉय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद-211011

ई-मेलः sahityaseva@rediffmail.com

तपती रेत

गांव का मगत गडरिया कहता है- नेताओ के आने से गांव वालों को दौ-चार दारू की बोतल तो मिल जायेगा-अल्पसख्यक समुदाय कों वोटिग तक मरन विरथनी की दावत रोज मिल जायगा। शाकाहार मजदूर किसान को क्या मिलेगा? दो सूखी रोटी और हरि मिर्च नून की चटनी भी नसीब नही होता है।

गाँव का झमुआ खटीक दौड़ा आया है, गांव के हर गली कूचें में हांक लगाते हुए कहता है- ''नेता जी के दालाब पर पारटी (पार्टी) वाले आए है। गांव वालों को बुलाया है, लेकिन झमुआ के हांक पर कोई भी ध्यान नहीं देता। गली के मोड़ पर कुछ गांव वाले खड़े होकर चर्चा कर रहे हैं- पांच वर्ष तक पिछला चुनाव जीतने के बाद किसी नेता ने शकल नहीं दिखाई, अब चुनाव नजदीक आ रहा है तो नेतागण का गाँव में आना-जाना शुरू हो गया। यह गांव के उत्थान व विकास करने थोड़े ही आ रहे है, इन्हें तो चुनाव जीतने के वोट चाहिए, जनता को सब्जबाग़ दिखा झूठे वादे कर आश्वासन देकर चले जायेंगे, चुनाव के बाद फिर पांच वर्ष तक लौटकर नहीं आऐगें। यह सिलसिला गत छः दशक से बराबर चलता चला आ रहा है।

गांव का मंगत गडरिया कहता है- "नेताओ के आने से गांव वालों को दो-चार दारू की बोतल तो मिल जाएगी। अल्पसंख्यक समुदाय कों वोटिग तक मटन बिरयानी की दावत रोज मिल जाएगी। शाकाहारी मजदूर किसान को क्या मिलेगा? दो सूखी रोटी और हरी मिर्च, नून की चटनी भी नसीब नही होता है। एक जमाना था जब गाँव के हर किसान के घर अनाज का अम्बार लगा होता था। दूध, दही, घी में डूबे होते थे आज चाय के लिए परवान (दूध का वासन घुला पानी) तक नसीब नही होता। दूधिया ठेकी खंगाल कर लै जाते है। सब कुछ तो राजनीतिज्ञों के वोटनीति की भेंट चढ़ गवा है। राजनीतिज्ञों के पास गिरवी पड़ा है।"

परती का अर्थ होता है दृगिरवी, परिसंस्कार का पारिभाषिक विकल्प हैदृगिरवी रखा हुआ संस्कार। हमारे देश के पूर्वजों ने भारत की प्राचीनतम संस्कार को वर्तमान राजनीतिज्ञों के पास गिरवी रख दिया है। सुख समृद्धि कहां से प्राप्त होगी? क्यों कि आज समाज का राजनीतिकरण हो चुका है। समाज का रिमोट राजनीतिक नेताओ के हाथ में है तो फिर आजादी कैसी? आजादी का अर्थ है गुण्डा वृत्ति, जिसमें हमारा समाज पूर्णरूपेण संलिप्त है।

आराम सिंह ने साइकिल का ब्रेक लगाया देखा दृनेताजी का भाषण हो रहा है। गांव के उलूआ लोग इकट्ठा है। नेता जी लाल टोपी पहने जोश के साथ भाषण दे रहे हैदृ ''अगली सत्ता हमारी पार्टी की है। हम भ्रष्टाचार और महंगाई को जड़ से उखाड़ फेकेगें। बस हमें आपके एक वोट की जरूरत है।"

-डॉ० जेबा रसीद,
जोधपुर, राजस्थान

उनके भाषण में सच्चाई कम और जोश ज्यादा है। ओजस्वी भाषण से अब भारत की जनता कों बेवकूफ बनाना संभव नहीं है। हजारो आदमी इकट्ठा है , इस हो हल्ले में एक दूसरे का दम भर रहे हैं। इंसानो के इस सैलाब में गांव की जनता से ज्यादा नेता थे। दर्जनों सुरक्षागार्ड पुलिस वाले, खोमचे वाले भी पहुंच गये थे, न जाने कितने लुन्ड (युवक) झण्डे बैनर लिए पहुँचे थे, ना जाने कैसे स्थानीय पार्टी नेताओ को खबर लग गई कि गाँव में मंत्री जी आए हुए हैं तो लाउडस्पीकर की व्यवस्था भी पलक झपकते हो गई थी। मानो गांव में कोई बड़ा पार्टी जलसा हो। नजारा देखा तो सोचा इस भयानक महंगाई में किसको घर परिवार चलाने के अलावा इस प्रकार के आयोजनो में भाग लेने की फुर्सत है? गरीबी रेखा से नीचे जीवन यापन करने वाला आदमी अपने बाल-बच्चो के भरण-पोषण दिन भर हाड़ तोड़ मेहनत करने के बाद भी शाम को रोटी के लिए परेशान है, के लिए पार्टी और राजनीति का क्या महत्व है? सत्ता सरकार किसी भी पार्टी की हो। उसे तो खेतों पर मजदूरी करके ही रोटी

नसीब होगी। पार्टी वाले उसके भोजन, वस्त्र और सर छुपाने के लिए झोपड़ी की व्यवस्था नही करेगें। उन्हें तो सिर्फ वोट चाहिए। नेताओ को पांच लाख की कार, अकूत अवैध धन सम्पदा संग्रह करने के बाद भी संतोष नहीं है, आ जाते है जनता को उल्लू बनाने के लिए। विभिन्न पार्टी वाले आखिर आम अलाम से क्या चाहते है? इनका मकसद क्या है? इस प्रकार सभा बांध कर लाउडस्पीकर में चीख चीखकर किसका हित चाहते है? अब गांव के लोग भी समझने लगे है।

आराम सिंह के साइकिल का पहिया दो क्षण के लिए रूका , उसका घर तो गांव में ही है, मगर रोज रोजगार की तलाश में शहरो कस्बों की सड़क नाप कर रोज शाम को गांव पहुंच जाता है। उसने मस्तिक पर जोर डाल कर सोचा- 'यह कैसा तमाशा है। नेता जी के दालान पर हो रहा है। गांव के लोग प्रेम सिंह को नेता जी ही मानते है। उनके घर के अन्दर भले ही कुछ न हो लेकिन उनके पास कोर्ट कचहरी से लेकर राजनीति तक हर समस्या का समाधान सुझाव है। कानूनी और राजनीतिक कूट नीतिक दांव पेंच है।सब के लिए गांव का दालान प्रतिष्ठ है। संतरी से मंत्री तक यह दस्तक देते है, विशेष कर चुनाव अवधि काल में दालान पर रौनक बनी रहती है।- ''अगर इतना रूपया इतना समय इस देश के पिछड़े समाज के उत्थान में लगाया जाता तो गांव ही नही पूरा देश खुशहाल होता।''

थोड़ी चेतना आई जिन्दगी का पहिया साइकिल के पैडल पर रख घुमाया जाता है, आगे गली के नुक्कड़ पर पहुँचा करन सिंह के मकान के आगे लगा बैनर पढ़ा, आज देश का गरीब तबका जिसे गुप्तांग ढकने के लिए लंगोटी उपलब्ध नहीं है। स्त्रियों के अंग नंगे है, दो मीटर कपड़े के लिए परेशान हैं, वहां हजारो मीटर कपड़ा झण्डे बैनरो में पार्टी वाले बर्बाद कर देते हैं। फिर देश से गरीबी मिटाने का खोखला दावा करते है। जिसको देखो, खद्दर धारण किए या लाल-भगवा पीला वस्त्र धारण कर गले में प्रतीक चिन्ह रूद्राक्ष माला या राम नामी डाले अलग-अलग वेशभूषा बनाए लोगो को उगाते फिर रहे है। ना जाने कहां कहां से बड़ी संख्या में दिल्ली जंतर मन्तर की तरफ भागा जा रहा है। वहां पर देश की भयावह स्थिति पर इन्हीं समाज सेवियों का अनशन है। धरना आन्दोलन है इससे सत्तारूढ़ सरकार पर क्या फर्क पड़ता है। इस भीड़ को देखकर खोमचे वाले ज्यादा माल बेचने के लिए अनशन स्थल की तरफ दौड़ा चला आ रहा है, उसे नेताओं के धरना अनशन से क्या लेना देना है। तो कोई दंगा-फसाद के आशंकाओ से परेशान है, सरकारी तंत्र (अमला) शांति व्यवस्था बनाए रखने में व्यस्त है। पी.ए.सी. पुलिस फोर्स के लोगो ने आयोजन स्थल को घेर रखा है। कुछ छुटभैया नेता इस मसले को वोट की राजनीति का रूप देने में मगशूल हैं। आम अवाम की भावनाओं को भड़का-उकसाकर भोले भाले लोगों को रक्त बहाने के लिए विवश करते देखे जा सकते हैं। लाउडस्पीकरों की तेज आवाज से थकान होने लगी तो दिमाग पर जोर देकर सोचा- 'क्यों हो रहा है यह सब तमाशा? सामने वाले ढाबे में बैठे कुछ लोग दारू पान करने में मस्त है। एक सुरूर में खाली गिलास को ही मुंह में लगाए बका जा रहा है,- ''कम्बख्त अंगूर की बेटी ने भी धोखा दे दिया अबे लौड़े एक पौवा तो ला दे रे रूपये दे दूंगा- भाग नही जाऊंगा शहर छोड़कर। मेरा तो धंधा ही नेताओ का काम करना है, हम झण्डे बैनर नहीं उठायेगे नेताओं के नारे नहीं लगाएंगे तो यह नेता ही क्या कर लेगें?'' गांव कस्बों से किराये के लोगों को लाकर जुलूस बनवा देते है, तो इन नेताओं की चलती है, वर्ना इन्हे पूछेगा कौन।''

ढाबे के नौकर ने एक पौवा लाकर नशेड़ी के आगे रख दिया था। मालिक ने खाते मे दो लिख दिया था। उसके बाप के जेब से क्या जाता है, ढाबे का बिल तो नेता ही अदा करेगा। उसे वोट जो लेना है। जब एक एक वोट पर पार्टी नेताओ के लाखों रूपये खर्च होते है। उसकी भरपाई (वसूली) भी तो आम जनता से ही होना है। भ्रष्टनीति को नहीं अपनाएंगे, करोड़ों का घपला घोटला नही करेगें तो आम चुनाव के लिए अरबों-करोड़ो रूपया खर्च कहां से आएगा?'' नशेड़ी लोग मेज पर जोर-जोर से थपकी मार कर न जाने क्या-क्या बक रहे है।

जुम्मा खांन- अपनी सफेद दाढ़ी पर हाथ फेर कर कहता है-

''अमा यार लोकपाल कानून बने या न बने आपुन का क्या?- हमें तो कन्नी-बरछी ही चलानी है जीवन भर-हाड़मास गलाते हम मजदूर है,

हवेली मे मौज करतें यह पूंजीवादी लोग है। मटन मुसल्लम इनके यहां पकता है, हमें तो आलू का सोरबा भी नसीब नही होता। यह सब तो मुल्ला-मौलवियों के लिए बना है, आज कल तो राजनैतिक रैलियों का काम कर रहा हूँ ।कड़ी धूप में कन्नी-बसूली चलाने, ईट काटने पर दिनभर के ढाई सौ रूपल्ली मिलते हैं।इस से परिवार का चटनी रोटी भी पूरा नही होता। रैली में प्रति आदमी ५०० रूपये मिल जाते है। तो ठर्रे का घूंट नसीब हो जाता है। इतना काम है कि दो घूंट दारू पीने को भी फुरसत नही है। अल्ला करे यह नेताओं के रैली-जलसे पूरे वर्ष चलता रहें।'' पार्टी वाले नोचे-खाए जा रहे है। कम्बखत अजान से पहले दरवाजे पर दस्तक देने आ जाते है।

''बसः यही मेरा हाल है मिथा-कपड़े फोकट में मिल जाता है! मुद्दत से बिरयानी का मजा नही चखा था । रोज दारू के साथ कोरमा-बिरयानी नान मिल जाता है! बाल बच्चों के लिए भी बांध ले जाता हूँ।

नगद ५०० अलग मिलते है, यार मौज आ रहा है।देश में झगड़े, फसाद, धरना आन्दोलन ,चुनाव का सिलसिला यूंही चलता रहें तो गरीबी कैसी? हमें चुनाव-राजनीति से क्या मतलब है, सिर्फ मजदूरी से मतलब है। दिन भर कड़ी धूप में गैती-फावड़ा चलाकर ईद में एक कुर्ता पाजामा भी नही बना सका। (दूसरे नशेड़ी ने दारू के नशे में झूमते हुए कहा) दंगा फसाद में लोग कटते-मरते है तो हमे क्या फर्क पड़ता है,- देश की जनसंख्या भी तो बढ़ गई है, किसी प्रकार कम तो होना ही चाहिए। दंगा फसाद करवाना भी तो देश विकास का काम है,- जनता कम होगी तो महंगाई घटेगी।'' (तीसरे नशेड़ी ने दारू का भरा गिलास एक झटके में गले से नीचे उतारते हुए कहा)- अपनी तो सहालग चल रही हैं जिस मंत्री-विधायक को देखों दफतर में बुलाकर कहता है मेरा काम करों,- जनता के बीच जाकर जनता में उत्पात मचाना है। मुंह मांगा मजदूरी मिलेगा। जनता-जनता में पत्थर बरसा दो अपने बाप का क्या जाता है, पकड़े गये तो नेता जी छुड़ा लाएगे। पार्टी वाले मोबाईल और साथ में रूपयों की गड्डी भी दे गये, हजार हजार नोटो की गडडी है। असली-नकली सब चलता हैं देखने जांच करने की फुरसत किसको है।

''मियां उपर वाला भला करें देश के इन नेताओं का, ना जाने कितने गरीबों का रोटी-रोजी चलता है। इनके राजनीतिक आयोजनो से, सरकारी-पार्टी का रूपया है इनके सेहत पर क्या फर्क पड़ता है, इन्हें जनता नही, जनता का वोट चाहिए। चुनाव जीत कर सरकार सत्ता रूढ़ होकर तिजौरियां भरने के लिए है।आज का नेता जनता का भला कब चाहता है, जूते मारो राजकरो की नीति-प्रव्रिति चल रही है। सभी पार्टीयां वोट के लिए चाणक्य नीति चलाए हुए है। देश को घुन की तरह खोखला कर रहे है जनता से दावा कर रहे है हम विकास कर रहे है किसी पार्टी नेता की नीयत साफ नही है। देश में अमन-चैन होते ही इनकी कुर्सी हिलने लगती है, तो दंगा-फंसाद देश साम्प्रदायिक उनमाद भड़का देते है, लोग मंहगाई को भूल रहेगें कोई कुछ सोचेगा नहीं।''

''अमा जुम्मन भाई छोड़ इस पचड़े को हमारा इससे क्या लेना-देना, हमारे भारत की जनता ते बेवकूफ है, दारू के एक बोतल और मुर्गे के एक टांग पर अपनी जमात और ईमान बेचने वाले है। अगर जनता सही होती तो आज देश कंगाली के कगार पर खड़ा नहीं होता।

मंगतू काका ने गंभीरता से सोचने के बाद हुक्के को गुडगुड़ाते हुए कहा, गांधी टोपी को थोड़ी तिरछी कर मूंछो पर ताव देकर बोले ''नेता घड़ियाली आंसू बहा कर- भिन्न-भिन्न रूपी मुखौटा लगाकर धार्मिक उनमाद पैदा करके गांधी नीति की आड़ में गंदी राजनीति कर रहे है, एक तरफ तो यह राष्ट्र विरोधियों को दे रहे हैं, उन्हीं की तर्ज पर हत्या-बलात्कार लूट-खसोट मचाये है। एक विवाद खत्म नही होता दूसरा तैयार, जिससे आम-आदमी का मुंह बंद रहे।''

तू भी अव्वल नम्बर का गधा है, लोगो का सिर धुन रहा है, देश की राजनीति से गरीब का क्या मतलब? उसे तो सिर्फ दो जून रोटी की फिक्र है। बता तूने आज कितने रूपये कमाए, जलसे में दारू और बिरयानी खूब मिली होगी?'' सरदार विचित्र सिंह ने टसक लेते हुए कहा सरदार विचित्र सिह प्राइवेट टैक्सी चलाता है, २०० रू प्रतिदिन मालिक का निकाल कर जो शाम तक बचता है, परिवार की दाल रोटी का खर्चा भी पूरा नही हो पाता। कालू मसीह भी ड्राइवर है,

मुंह विचकाकर बोला रामूआ- औतारी का हाल मत पूछो, अब हेल्परी करना छोड़कर नेताओ के झण्डे बैनर उठाए फिरता है, बसः काम ही काम है, सुबह से शाम तक फुसर्त नही है, इसको नेताओं की चमचागिरी करने से। मुद्दतों के बाद अंग्रेजी दारू का स्वाद चखने को मिला है। देशी ठर्रा पीते-पीते आँखे खराब हो गई है। ऊपर वाले से दुआ करो शहर में दंगा-फंसाद होता रहें, नेताओं के आयोजन होता रहे, दुकानदार भी कमाते रहें नेतागिरी भी चलती रहे और हम निठल्लो का धंधा भी चलता रहें, वर्ना दारू तो दूर रोटी भी नसीब नही होग। अब तो बीबी भी कहने लगी है, धंधा अच्छा चल रहा है, बच्चो को कपड़े बनवा दो, मेरे कानों की बालियां नही है, बनवा दो, कल क्या मालूम क्या हो?''

''कम्बख्त मुझे वह खादी काटी है'',

पहन ले यार एक महिने की तो बात है, फिर न यह खादी दिखेगी न खादी वाले दिखेगें। इसी खादी से माला-माल हो जायेगा।" जुम्मन मियां बोले दाड़ी में हाथफेरा और नारियल का हुक्का गुड़गुडाने लगें। हुक्के के कस के साथ अंग्रेजी दारू का घूट और सामी कवाब का गस्सा बाकई में मजेदार होता है। हामीद मिया भी सिगरेट का कस लगाते हुए-मैने भी यार बैनर-पोस्टर का धंधा चालू कर दिया है, सनिमा के लड़कों को इकठठा करके धकापेल काम चालू है, अभी किसी पार्टी नेता के लिए बड़े जलसे में एक हजार आदमी गांव से ठेके पर लाया था भीड़ इकठझ करने के लिए पूरे ३ हजार रूपये कम गये थे सिर्फ जिन्दाबाद के नारे लगवाने, कपड़े बांटना खादी टोपी बांटना काम बहुत ज्यादा है। नया नेता आया है, मौजुद राजनीति के विरूद्ध आवाज उठाकर सत्ता सरकार तक पहूंचना उसका मकशद है। लेकिन आपुन को क्या? आपुन को तो धंधे से मतलब है। अपना नाम बड़े बड़े पार्टी नेताओं की जुबान पर चढ़ गया है, इसी के बहाने बड़े नेताओ से उठा-बैठक हो गई हैं।''

''अमा मियां मुहल्ले वाले कहते हैं, कमेटी बनाएगें और तुमहे चुनाव लड़वाएगें सभी मौहम्डन वोट तो तुमहे मिलेगे ही, हरिजन जाटव यादव भी तुमहे ही अपना वोट देगें। खर्चा एक करोड़ रूपया पार्टी दे रही है, बाकी जनता से चंदा इकट्ठा हो जायगा। अरबो रूपया काला धन काला धंधा करने वालो के पास जमा है। वह कब काम आयगा? (जुम्मन मिया बोले) दारू के खुमारी ने करवट बदली-

''मै तो कहता हूँ सभी पार्टियों से बना कर रहो पता नही कब कौन सी पार्टी की लुटिया डूब जाये। कम से कम दूसरी पार्टी में तो मौका मिलेगा ही, आज देश को राजनीतिक दल बदलू विशेषज्ञ नेताओ की जरूरत है। सभी पार्टी के चम्पा बने रहों। चम्चा कलछो का महात्म है। प्यारे-सब में फिर बैठ जायगा। रूपया लो, दंगा-फसाद करवाने का ठेका ले लों, अरबो-करोड़ो के मालिक बन जाओगे।"

''रैलियो-जलसों में भीड़ जुटाने का ठेका, मारपीट दंगा फसाद करवाने का ठेका, बाजार से वस्तुएं जाम करवाने का ठेका, बिजली पानी तेल गायब करने का ठेका। और दूसरी तरफ इन ठेको के खिलाफ जनता को भड़का का आगजनी करने चक्काजाम करवाने का ठेका। नुक्कड़ सभाएं करनें नेताओ पार्टीयों को वोट दिलवाने का ठेका। करोड़ो-अरबों रूपयों में छूटता है। देश में रोजगार की कमी नही है, आम जनता के सामने उम्मीदवार की तारीफ में घड़िवाली आँसू बहाने का ठेका, राजनीतिक पार्टियों को झण्डे-बैनर-बिल्लो और ठेके के आदमी सप्लाई करने का धंधा-?''

''अमा यार देश की तरकक्की और विकास भी तो वही नेता लोग कर रहे है। ३ रूपये कि.ग्रा. आज २० रू० है। ३५ रू० का सरसों तेल २०० रू है, पांच का सिक्का बच्चा दूर फेक देता है, १५० रू रोज में मजदूर नहीं मिलता रसोई गैस ८०० रूपया हो गया है, बालमार्ट ने बाजार को ठप्प कर दिया है, यह विकास नही है तो और क्या है? नेता देश से गरीबी-बेरोजगारी हटाने का दावा करते है, गरीब बढ़ती जा रही है, देश की तरक्की हजारो साल में भी नही होने वाला, तुम्हारी तरक्की चन्द दिनो में हो गई? लाखो आदमी रिस्वत खोरी भ्रष्ट कमाई से मौज कर रहा है, बाजार में चिकनकरी, बदूरी मुर्गा चाहे दो सौ रूपया प्लेट हो जाए इन नेताओ को क्या फर्क पड़ता है, रूपये इनके गांठ से थोड़े ही जा रहे है, जनता का खूंन निचोड़ कर इकट्ठा किया हुआ है। आज गली गली हर दरवाजे पर एक वोट की भीख मांग रहे है, चूड़े चमार, खटिक के चरण छू रहे है,

चुनाव जीतने के बाद ऐसे गायब हो जायेगें जैसे गधे के सिर से सींग गायब होता है, ढूँढे नही मिलेगे मियां, नारा लगाओं जो दारू-नोट देगा उसे वोट देगें, यही तो है हमारे नेताजी की पार्टी का घोषणा पत्र को पढ़कर लोगों का करोड़ो की संख्या में समर्थन मिल रहा है।'' कहते शंकर दादा ने गिलास में बचे दारू को एक ही घूंट में गले से नीचे उतार लिया।''

और नशे में झूमने लगा। गिलास को सड़क पर इतने जोर से पटका कि दूर कर कांच के टुकड़े सड़क पर बिखर गये- ''नई पार्टी बनाकर सोचता है प्रधान मंत्री बनना,- जानता नहीं देश के राष्ट्रपति तो हम हैं, जिसको चाहेगे प्रधानमंत्री बना देगें, कोई सच्चा गांधी वादी तो मैदान में आए? गांधी टोपी पहन लेने से कोई नेता नहीं बन जाता अब तो गांधी टोपी भी लाल-पीले नीले-हरे बनने लगे हैं। कोई टोपी में '' मैं अन्ना हूँ'' लिखा रहा है तो कोई "मैं केजरीवाल अरविद हूँ" लिखा रहा है?''

फिर सोच इसका अन्त क्या होगा? एक दम उसे जैसे लकवा मार गया। सोचने लगा- कितने दिन यह गाड़ी चलेगी। जब सभी लोग आन्दोलनकारी हिंसक हो जायेगें , जनता की रक्षा कौन करेगा। यदूवंसी ने चाय प्याला मेज पर रखा- ''इन शराबियों की कौन सुनता है, नेता तों अपना काम करेगें ही, यह कोई पुलिस थाना तो है नही, ले देकर मामला निबटवा दे, नेता जी की चौपाल और हुकम सिंह का ढाबा है, सुबह से शाम तक फिरंगी नशेड़ियों का जमघट लगा रहता है। खुलेआम शराब परोसने पर पाबंदी है, लेकिन हुकुमसिह के ढाबे हुकुमसिह का कानून चलता है, पुलिस वाले भी खुलेआम छक कर जाम छलकाते हैं ।जब सैया भए कोतवाल तो डर कैसा?'' रूमाल से माथे पर उभरे पसीने की बूंदो को पोंछा, एक गिलास पानी मंगवाया, पैसा दिया और ढाबे से उठकर चल दिया। रास्ते भर सोचता रहा देश का क्या होगा- देश की जनता का क्या होगा- उनका क्या होगा, जिनके घर दो दिन तक चूल्हा नही जलता है, भूखे मर जायेगे। कोई नेता पूछने नही आयेगा। मरने के बाद कफन भी नसीब नही होगा उन्हें।- वोट के लिए देश को सैकड़ो साल पीछे धकेलने वाले नेता लोग? किस पर विश्वास करें जनता? तब फिंरगी अंग्रेजो के गुलाम थे, आज गाँधी वादी सत्ताधरी लोगों के गुलाम हैं, वे नेता एक एक कर चले गये, यह भी एक दिन चले जायेगे, फिर देश में झूठ-मक्कारी बेइमानी-भ्रष्टाचार जाति वर्ण वर्ग बाद क्यों है? कि हर आदमी अर्थ उपार्जन की दौड़ में भागे जा रहा है। देश और समाज की चिंता किसे है, हर कोई काला धन संग्रह करने में व्यस्त है। धन सम्पत्ति को ही भगवान मानने लगा है। हमारे भारत के संविधान में इतनी विकृतियां है कि उससे भ्रष्ट होने की प्रेरणा मिल रही है। वोट की राजनीति ही इस भ्रष्टचार की मूल जड़ है। हर नेता मंत्रीपद प्राप्त करना चाहता है। मंत्रीपद से ही आकूत धन संग्रह संभव है। देश के लोगों के पास इस राजनीतिक व्यवस्था को सुधारने का कोई विकल्प नहीं है। कोई भी राजनीतिक पार्टी या नेता स्वच्छ छवि का नही है कि बैठकर आम जनता के बारे सोचें। ध्यान दे कि क्या करना चाहिए. कि फुर्सत किसी के पास नही है। आज हर आदमी को सही व्यक्ति की तलाश है। कोई सच्चा-संत-व्यक्तित्व मिल जाए सच्चा नेता आ जाए, जो देश का भविष्य बदल दें। लेकिन देश की भ्रष्ट राजनीति ऐसे व्यक्ति को आने नही देती। बाबा रामदेव कहते है देश की राजनीति व्यवस्था को बदलने की जरूरत है। अन्ना हमारे कहते है- लोकपाल लाओ भ्रष्टाचार मिटाओ, क्या भ्रष्टाचार अनशन धरना या आन्दोलनो से मिटेगा? वे राजनीति में आने को तैयार नहीं । अब जिसकी लाठी उसकी भैंस लोकोक्ति चरितार्थ होती है।

सोचता हुआ वह चलता चला गया। मैं भी उसके साथ चलता रहा। कुछ दूर जाने पर देखा एक पुरानी राजनैतिक पार्टी के कार्यकर्ता, (भाड़े के टट्टू) भाड़े के लोगों को एकत्रित कर झण्डे बैनर लिए जिन्दाबाद के नारे नगा है। आलू पूड़ी के पैकेट नोच-नोच कर खा रहे है। सामने से एक ट्रक जिसपर ८०-६० लड़के सवार है, भ्रष्टाचार मिटके रहेगा-मिटके रहेगा- भारत माता जिंदाबाद के नारे लगा रहे हैं नारे से वातावरण गूंज उठा है। कच्ची सड़क पर एक धूल का गुब्बार बना और उसी में विलीन हो गया।''

माँ

आदत है हर रोज शाम को मन्दिर जाकर कुछ समय बिताने की। दिवाली थी उस दिन। पूरा दिन काफी व्यस्त रही, शाम को भी काम खत्म नहीं हो रहा था। पर मन था कि एक चक्कर मन्दिर का काट आऊँ। जैसे-तैसे काम निबटाकर मैं मन्दिर चली गई। मन्दिर का पुजारी उस अहाते में ही छोटी सी कुटिया में रहता था। मन्दिर में माथा टेक कर मैं पुजारी जी के पास कुछ देने चली गई। देखा पुजारी जी घर में पूजा कर रहे थे व उनकी आँखों से बरबस आँसू टपक रहे थे। मैं भी जूते उतार कर धीरे से वहां बैठ गई। 5—10 मिनट बाद उन्होंने आँखें खोली। मुझे देखकर बोले, ''माफ करना बिटिया, कुछ भावुक हो गया। देखो ये मेरी माँ की तस्वीर, मैं आज के दिन इसकी पूजा करता हूँ। आपको बताऊँ, हम 9 भाई-बहन थे, मेरा बाप षराबी था, दिवाली से 4 दिन पहले ही जुआ खेलने बैठ जाता था, मेरी गरीब माँ, फटे-पुराने कपड़ों में, प्लास्टिक की चप्पल पहने, कमजोर सी देह में लोगों के घरों में बासन माँजती, झाडू-फटका करती। इन दिनों लोग उससे बहुत काम लेते, घर साफ करवाते, कपड़े धुलवाते, बासन मंजवाते, फिर कहीं मिठाई का डिब्बा और 5रू. देते। वह सारी थकान भूल जाती व सामान लाकर हमारे सामने खोलकर रख देती। हम सब भाई-बहन बिन कुछ महसूस किये खुश हो-होकर, शोर मचाकर खाते। बस हमारी दिवाली मन जाती। आज सब कुछ है पर माँ नहीं है।'' कहकर वे फिर से रोने लगे।

सोच

रोहन मेरे पड़ोस में रहता हैं। मैं भी इस स्थान पर कुछ दिनों पहले ही आई हूँ। वह छोटा सा बालक मात्र 10—11 बरस का है। अकसर मुझे देखते ही मुस्कुरा देता। मुझे भी उसे देखकर अच्छा लगता। एक दिन साथ की पडोसन ने बताया कि ये बालक मात्र 5 बरस का था जब इसकी मॉ चल बसी। अब यह सौतेली मॉ के पास हैं, उसके भी 2 बच्चे और हैं। मॉ-बाप दोनों इससे अच्छा व्यवहार नहीं करते। फिर भी यह हमेशा मुस्कुराता इनका सारा काम करता रहता है। एक दिन जोरों की बारिश हो रही थी। मैं गलियारे में बैठी बारिश का मजा ले रही थी कि रोहन भी हमारे घर आ कर मेरे पीछे खड़ा हो गया। पानी से भीगा वह और भी सिकुड़ा सा लग रहा था। मुझे चाय पीने का बहाना मिल गया। मैं उसे अन्दर ले गई। तौलिये से उसका सिर पोंछा, उसे कुर्सी पर बिठाया और चाय बनाने लगी। इसी बीच मैंने पढ़ाई के बारे में उससे कुछ बातें पूछनी शुरू की। गजब के जवाब थे उसके । मेरा मन प्रसन्न हो गया। मैंने उसे शाबाशी दी और चाय बिस्कुट खाने का आग्रह किया। जैसे ही उसने चाय का कप उठाया, उसकी बाजू पर नीला गहरा निशान मुझे पसीज गया। ''ये क्या हुआ?'' वो चुप शान्त बैठा रहा। मैंने फिर पूछा, उसने जवाब दिया, ''कल रात मॉ की मदद कर रहा था, ठीक से काम न कर पाय, दो रोटी मुझसे जल गई। मॉ ने चिमटा मार दिया। बस ये जरा सी लग गई।'' मेरे मुँह से चीख निकल गई, ''जरा सी, ये जरा सी है। तेरे पापा ने कुछ नहीं कहा?'' ''वो क्या कहते, वो तो मुझे ही डॉटते। पर ऑटी, एक बात बताऊँ, ये कोई बड़ी बात नहीं हैं। अगर आज मेरी मॉ जिन्दा होती तो मैं बिगड़ जाता। ये दोनों सख्त हैं तो मैं अपनी कक्षा में प्रथम आता हूँ और कभी एक बड़ा अफसर बन ही जाऊँगा। फिर देखना-------''कह कर वो तेजी से भाग गया और मैं उसकी बड़ी अनोखी सोच पर हाथ मलती रह गई।

वो सम्मान

पिछले माह मुझे एक कार्यक्रम में जाने का मौका मिला। मेरी एक परिचिता मुझे ले गई। उसने बताया कि यहॉ के महिला मंड़ल ने उन जोड़ो को सम्मानित करने के लिये बुलाया हैं जिन्होंने जीवन के 50 साल बिताए हैं। कार्यक्रम शहर के एक हॉल में था। करीब 70—80 दम्पत्ति जोड़े बैठे थे। मासूम बुजुर्ग चेहरे। बोलती ऑखें, शॉत चेहरे और इक ठहरा सा जीवन। सब एक-दूसरे को एक दयनीय नजरों से देख रहे थे। कार्यक्रम शुरू हुआ। सूची

में लिखे नामों के साथ सबको मंच पर आमंत्रित किया गया। शॉल पहनाकर, स्मृति चिन्ह लेकर सब अपने-अपने स्थान पर आ गये। यकीन मानिये। पूरे हॉल में एक अजीब सा सन्नाटा था। मेरी परिचित ने मुझे कुछ शब्द बोलने को मंच पर आमंत्रित किया। उनके लिये हार्दिक अभिवादन के सिवा दिल में और क्या हो सकता है। वो लोग मेरे सामने थे जिन्होंने अपने माता-पिता, अपने बच्चों और फिर अपने नाती-पोतों को पाला था, आज यहाँ निचुड़ी सी देह लिये बैठे हैं। सोचा मन की शंका मिटा ही लूँ। 4–5 लाइनें उनके स्वागत, उनकी सेहत और उनके भविष्य की उज्जवल कामना करके पूछ ही बैठी, ''कृपया आज वो लोग हाथ उठायें, जो अपने बच्चों के साथ रह रहे। हैं और खुश हैं।'' सब लोग एक-दूसरे की ओर ताकने लगे जैसे मैंने कोई कितना बड़ा गलत प्रश्न पूछ लिया हो। सबके हाथ बंध गये, एक भी हाथ ऊपर नहीं उठा। मंच की ओर थी टकटकी बाँधे अनेक प्रश्नों को समेटे शून्य में ताकती आँखें।

-शबनम शर्मा

अनमोल कुंज, जिला सिरमौर, हि०प्र०

आँचलिक कथा- रेणु पृष्ठ 8 का शेष...

असाध्य रोग टी०बी० के कारण उनका कलेजा सड़ चुका था और अल्सर का रूप ले लिया था। अचानक 16 नवम्बर 1976 ई० को उनको खून की उल्टी हो गयी। तब उन्हें अस्पताल में भर्ती करा दिया गया। 24 मार्च 1977 को उनका ऑपरेशन हुआ लेकिन ऑपरेशन के बाद होश में नहीं आये। 11 अप्रैल 1977 ई० को यह क्रांतिदूत हमेशा के लिए विदा हो गये और साहित्य संसार में एक सन्नाटा छा गया, जिसकी पूर्ति आजतक नहीं हो सकी। विश्वेश्वर प्रसाद कोइराला ने इनकी मृत्यु के पश्चात उन पर लिखें संस्मरण में लिखा हैं-"सबसे बढ़कर रेणु मेरा छोटा भाई था। उसकी क्रान्तिकारी प्रवृत्ति और अन्याय तथा दमन का विरोध करने की उग्रता मेरी ही जैसी थी। उनके विचार मेरे जैसे लगते थे। ...वह स्वतंत्रता का प्रचण्ड योद्धा था। नेपाल में प्रजातंत्र के संघर्ष में उसने हमसे कंधे से कंधा मिलाया। राणा शासन को अपदस्थ करने हेतु नेपाली काग्रेस ने 1950 ई० में जो सशक्त क्रान्ति छेड़ी थी, उसमें रेणु भी शामिल हो गया और मुक्ति सेना की फौजी बर्दी में मेरे साथ बन्दूक लेकर मोर्चे पर कूद पड़ा। क्रान्ति के समय उसने नेपाली क्रान्ति के प्रचार तथा विराट् नगर में स्थापित एक गैरकानूनी आकाशवाणी के संगठन में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की।"

1996 से त्रैमासिक एवं 2001 से मासिक के रूप में निरन्तर प्रकाशित

कल, आज और कल भी बहुपयोगी

विश्व स्नेह समाज

हिन्दी मासिक

एक प्रति–15/रुपये, वार्षिक–150/रुपये, पंचवर्षीय–750/रुपये, आजीवन –1500/रुपये, संरक्षक: 11000/रुपये **खाता संख्या**–66600200000154, **आईएफएससी कोड**– बीएआरबी0वीजेपीआरईई (BARB0VJPREE (0-ZERO) सीधे खाते में जमा, आरटीजीएस, नेफ्ट, ऑन लाइन स्थानान्तरण कर, जमा पर्ची की कापी व पत्र व्यवहार का पता ई–मेल या 9335155949 ह्वाट्सएप कर देवें।

समीक्षा

मैं ऋणी रहूँगा सदा तेरा, तेरा मुझ पे है उपकार बड़ा

हिंदू संप्रदाय में कुल 16 संस्कारों में एक महत्वपूर्ण संस्कार विवाह संस्कार है। जिस महिला के साथ यज्ञ वेदी पर बैठकर, अग्नि को साक्षी मानकर, विवाह संस्कार किया जाता है केवल उसी महिला को धर्मपत्नी कहा जाता है। धर्मपत्नी के अधिकार पत्नी से अधिक होते हैं। किसी भी प्रकार के सामाजिक या धार्मिक आयोजन में पति के समकक्ष आसन ग्रहण करने का अधिकार सिर्फ धर्मपत्नी का होता है। पत्नी को अर्धांगिनी कहा जाता है, इसके पीछे वैज्ञानिक कारण है क्योंकि पति और पत्नी के मिलन से ही एक नए जीव की उत्पत्ति होती है। संगिनी का अर्थ होता है साथ रहने वाली स्त्री, साथिन, सहचरी। इस शब्द को बहुत सुंदर और आकर्षक माना जाता है। इतना ही नहीं इसका मतलब भी बहुत अच्छा होता है 'जीवनसाथी'। संगिनी नाम रखने से आपका बच्चा भी इस नाम के मतलब की तरह व्यवहार करने लगता है।

"कनक सदृष्य तपकर अग्नि में,
प्रखर तेज तुम पाना!
विपत्ति गर आ जाए जीवन पथ
पर धीरज ना तुम गँवाना!
धन धान्य से मंगल हो जीवन
लक्ष्मी तुम कहलाना!
अर्धांगिनी तुम, संगिनी हो हर दुख
हर जाना!

उपरोक्त क्यों लिखा गया आप इस किताब के शीर्षक से ही समझ गये होगें। राज्यपाल एवं राष्ट्रपति से पुरस्कृत शिक्षक, किशोर न्यायालय सोनभद्र के सदस्य एवं वरिष्ठ साहित्यकार डॉ० ओम प्रकाश त्रिपाठी जी द्वारा लिखित 'संगिनी' नामधारी के इस पुस्तक के लेखों एवं कविताओं को पढ़ने से ऐसा लगता है डॉ. त्रिपाठी का अपनी पत्नी यानि संगिनी से कितना अटूट बंधन, स्नेह था। विविध लेख, कविताएं उनके स्नेह एवं पत्नी के बिछड़ने से उनकी कमी से उपजे खालीपन को बड़े ही मार्मिक तरीके से शब्दों में पिरोया है। कुछ लेखों में अपनी संगिनी के जीवन के विस्मरणीय घटनाओं, उनके स्वभाव व कार्यो को शब्दजाल में पिरोया है। अपने वैवाहिक जीवन के प्रारब्धकाल से वैवाहिक जीवन के अंतकाल तक के तमाम पहलुओं को, अपनी संगिनी की खूबियों का बखान करते डॉ० त्रिपाठी थके नहीं है। ऐसा लगता है कि त्रिपाठीजी के अंदर अभी भी अपनी स्वर्गीय पत्नी के बिछुड़ने को लेकर अपार पीड़ा समाहित है, जिसका दर्द उनकी रचनाओं में झलका भी है। यद्यपि मेरी व्यक्तिगत मुलाकात आपकी स्वर्गीया पत्नी से नहीं हुई है लेकिन पढ़कर ऐसा लगता है कि वास्तव में वे एक आदर्श पत्नी, आदर्श बहू, आदर्श माँ के साथ-साथ समाज के लिए एक अच्छी मार्गदर्शिका के स्वभाव को धारण करने वाली रही

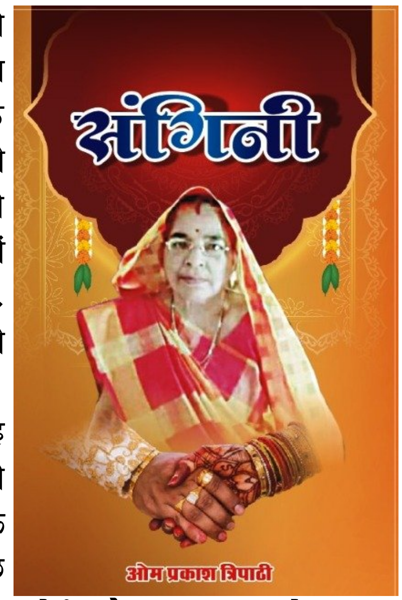

होगी। मैं इस पुस्तक को पढ़कर इतना भाव विभोर हूं कि लिखने के लिए शब्दों की कमी महसूस करने लगा हूं।

इस पुस्तक की सफलता की कामना करते हुए डॉ० त्रिपाठी के भावों को अति संक्षेप में इन पंक्तियों के साथ अपनी लेखनी को विराम देता हूं।

मैं ऋणी रहूँगा सदा तेरा,
तेरा मुझ पे है उपकार बड़ा।
वो शब्द कहाँ से लाऊँ मैं,
जो बता सके उद्गार मेरा।

समीक्षकः डॉ० गोकुलेश्वर द्विवेदी

पुस्तक का नाम : संगिनी
मूल्य : १००/रुपये
प्रकाशक : विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान, प्रयागराज

हनुमान जी 'बंदर'..पृष्ठ 14 का शेष...

पर.झूलते समय नीचे गडढ़े में पत्थर पर गिर पड़े। उठाकर देखा उनको कोई चोट नहीं आई थी तभी से इनको बजरंगबली कहने लगे। एक दिन हनुमान जी के मामा प्रतिसूर्या जी अपनी पत्नी रविसुन्दरी के साथ विमान में बैठकर शिवजी के पास आये थे तब उन्होंने अंजनी को वहां देखा और कहा कि आपकी खोज में पवन कुमार पागलों की तरह ढूढ़ रहे है। मैं उन्हें बता दूगां वह आपको

शीघ्र ही ले जायेंगे। उनके विमान में लाल रंग की मणि लगी हुई थी। वह हनुमान जी ने तोड़ ली, और अपने मुख में डालकर कुतरने लगे, बड़ी मुश्किल से उससे छुड़ाया। उसने उसे खाने का पदार्थ समझ लिया था। हनुमान कुछ बड़ा हो गया तब वशिष्ठ जी के आश्रम में पढ़ने के लिये भेजा जहां राम, लक्षमण, भरत, शत्रुघ्न पढ़ते थे, वहां राम से प्रथम भेंट हनुमान की हुई तो तभी से हनुमान का राम ने अपना परम मित्र बना लिया था और वह अयोध्या चले गये। वहां से ऋषि विश्वामित्र जो राम लक्ष्मण को अपने आश्रम में ले गये तो हनुमान जी का मन अयोध्या में नहीं लगा। वह अपने पिता पवन के पास चले गये जहां पर उनकी माता जी भी आ चुकी थी। जब पवन जी अंजनी को राजधानी में ले आये तो सभी नर नारी बड़े प्रसत्र हुये। माता केतुमती ने कहा मुझे बड़ा दुःख हो रहा है, मैंने तेरी अंगूठी देखकर भी अंजनी पर विश्वास नहीं किया और उसे घर से निकाल दिया था। हनुमान जी के आने के बाद पिता जी ने और विद्या ग्रहण करने के लिये अगस्त्य मुनि के

आश्रम में भेज दिया वहां विद्या प्राप्त कर घर आये और पिता के साथ राज-काज में सहयोग देने लगे। हनुमान जी के तीन भाई और थे, ऋतुमान, कीर्तिमान, अंशुमान। रावण वरूण युद्ध में भी हनुमान जी ने वरूण को हराकर बंदी बनाया और वरूण से कर देने और युद्ध पोतों के समुद्र में जाने-आने पर जो शुल्क लगता था वह हटवा कर उसे छोड़ दिया। हनुमान का विवाह सुग्रीव की बेटी पद्मरागा से हुआ था कुछ समय बाद सुग्रीव रतनपुर गये और विद्याधर से कहा हमारा घर पद्मरागा के बिना सूना-सूना सा रहता है आप हनुमान को हमें दे दो ये दोनों वहां पर ही रहा करेंगे। वह सुग्रीव के साथ किष्किन्धा जाकर रहने लगे। पद्मरागा गर्भवती हो गई थी। एक दिन समुद्र देखने गई तो वहां मगरमच्छ ने उसे निगल लिया। संयोग से अहिरावण का दूत अपने विमान में वहां से जा रहा था उसने मगरमच्छ द्वारा पद्मरागा को निगलते देख लिया। उसेन मगर को मारकर उसके पेट से पद्मरागा को निकाला। वह मर गई थी। उसने पद्मरागा को गर्भवती देख उसके पेट से बच्चे को निकाला और अपने साथ ले गया। वहां उसका मकरध्वज नाम रखा था, जो हनुमान जी का पुत्र कहलाया। पद्मरागा के मरने के बाद हनुमान जी ब्रह्मचारी ही रहे। उन्होंने दूसरी शादी नहीं की।

बुद्धिपूर्वक सोचकर देखे क्या राम परमात्मा थे जो इस तरह सीता की खोज करते रहे? क्या हनुमान बन्दर थे? यदि बन्दर होते तो महाविद्वान कैसे हुये? कभी बन्दर राजा का मंत्री होता है? क्या उनके पूर्वजों के नामों से आप नहीं जान सकते कि वह मनुष्य ही थे, पूंछ वाले बन्दर नही थे। राम के सारे काम हनुमान जी ने पूरे किये। लंका में जाकर सीता की खोज की लक्ष्मण के मूर्च्छित होने पर उड़न खटोले में जाकर पर्वत से जड़ी बूटी उखाड़कर छोटी सी पोटली बांधकर रातों-रात लेकर आये और लक्ष्मण के प्राण बचाये। युद्ध में सबसे अधिक राक्षसों को मारा, तो राम को इतने मन भा गये कि अयोध्या ले जाकर अपने राजा होने पर हनुमान जी को अपना मंत्री बनाया और सारे काम हनुमान जी से पूछकर लेकर करते थे, इसलिए राम के राज्य में हनुमान जी की पूंछ थी, उनके पूंछ नही थी। ऐसी भद्दी शक्ल इन मंदिरों के पुजारियों ने हनुमान जी का बनाकर रख दी। इनका रूप बिगाड़ कर रख दिया। हनुमान ने सूर्य को नहीं निगला था क्योंकि सूर्य पृथ्वी से तेरह लाख गुना बड़ा है उसने तो मणि को मुख में ड़ाला था।

सम्मानार्थ प्रस्ताव आमंत्रित हैं

साहित्य जगत् में लोकप्रिय, विष्वसनीय एवं राष्ट्रीय स्तर पर चर्चित **विश्व हिंदी साहित्य सेवा संस्थान,** 2003 से लगातार साहित्यिकारों/पत्रकारों/समाजसेवियों/कलाकारों को सम्मानित करता आ रहा है. इस वर्ष निम्नांकित सम्मान प्रस्तावित है-

1—20 वर्ष से कम उम्र वालों के लिएः पं. नेहरु सम्मान, श्रीमती चन्द्रावती देवी स्मषति सम्मान, श्री गोरखनाथ दुबे स्मषति सम्मान, बचपना सम्मान **2—20 से 40 वर्ष के लिएः** काका कलाम सम्मान, कल्पना चावला सम्मान, निर्भया सम्मान, पत्रकारश्री **3—40 वर्ष से ऊपर के लिएः** डॉ. होमी जहांगीर भाभा सम्मान, पत्रकार रत्न, समाज शिरोमणि, काव्य शिरोमणि, साहित्य शिरोमणि, **4-सभी आयु वर्ग के लिएः** विशिष्ट हिन्दी सेवी/हिंदी सेवी सम्मान, **राष्ट्रभाषा सम्मान, राजभाषा सम्मान, शिक्षकश्री, विधिश्री,** 5-समग्र साहित्य के लिए संस्थान की सबसे बड़ी उपाधियां क्रमश : साहित्य रत्न(डी.लिट), साहित्य गौरव(डाक्टरेट/पीएचडी), साहित्यश्री हैं.

अन्य किसी भी प्रकार की जानकारी के लिए ईमेल करे, या व्हाट्सएप करेंः

अंतिम तिथिः 15 जनवरी 2022

प्रतिभागियों को मांगे गये विवरण के साथ रुपये दो सौ पचास का चेक/डीडी/आरटीजीएस/नेफ्ट/आन लाईन अथवा सीधे संस्थान के खाते में जमा कर जमा रसीद की प्रति भेजना अनिवार्य होगा। खाता धारक का नामः **'विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान'** बैंक : **युनियन बैंक ऑफ इंडिया** शाखा : **प्रीतम नगर, इलाहाबाद** खाता संख्याः **538702010009259** आई.एफ.एस. कोडः यूबीआईएन0553875

सचिव, विश्व हिन्दी साहित्य सेवा संस्थान

एलआईजी—93, नीम सराय कॉलोनी, प्रयागराज-211011, ह्वाटसएप नं०: 9335155949,

sahityaseva@rediffmail.com, hindiseva15@gmail.com

विश्व हिन्दी सेवा संस्थान द्वारा शीघ्र प्रकाश्य पुस्तकें :

संगिनी :

रचनाकार :
डॉ० ओम प्रकाश त्रिपाठी,
सोनभद्र, उ०प्र०

मनलाभ मंजरी :

रचनाकार :
श्री लक्ष्मी कांत वैष्णव,
जांजगीर चांपा, छत्तीसगढ़

गुफ्तगू :

लेखक :
डॉ० सुधा सिन्हा,
पटना बिहार

संपूर्णम!   उत्पाद

भारतीयता बेमिशाल, गुणवत्ता लाजबाब,
विभिन्न प्रकार के स्मृति चिन्ह, मेडल, सजावटी समानों के लिए एक भरोसे मंद, सस्ता और उपयोगी उत्पाद

स्वामी, प्रकाशक, मुद्रक एवं संपादक गोकुलेश्वर कुमार द्विवेदी द्वारा एकेडेमी प्रेस, से मुद्रित तथा एल. आई.जी. 93, नीम सराय कॉलोनी, मुण्डेरा, इलाहाबाद से प्रकाशित।